है तुम केवलनामको मुख्य काहतहो सो कैसे तो सुनो जेहकी प्रीति
प्रतीति जहां नाम जेह साधन सो भई ताको कार्य तहां नामतेही
करि सरो नाम सफल होतहै अरु होउपर मेरे तो पितामाता सदृश
दोउअच्छर अरुहम बालकतुल्य अरनिअरो नाम अड़निको अड़तहैं
अर्थात् जगतमें बालक हठकरत है सो पितामाताको दियेहीबनत
है तहत मैं जौने कामनाकी टेकधरत हौं सोनामके प्रभावतें प्राप्त
होतहै चेतकोई कहे कि कविताई करि चतुराई करतहौ सो नहीं
शिवजू साखीहैं जौ कछूं राखिकरि कहते होंयगे तौजिह्वा गलिकरि
गिरो अर्थात् जोकछू हृदयको सिद्धान्त सोई कहेहैं तुलसीको आपनो
भलो केवल राम नाम तें समुझि परो है अवरन्ह की नहीं कहते
यह अर्थ है ॥ २२६ ॥

मू । नामराम रावरोई हितुमेरे । स्वारथपरमारथसाथिनसोंभुजा
उठाइ कहौं टेरे । जननीजनकतज्यौ जन्मिकर्मबिनु बिधिहुं
सृज्यौ हौं अवढेरे । मोहिंसेकोउ कोउ कहत रामहिंको सो प्रसंग
केहि केरे । फिर्यौ ललातबिनु नाम उदरलगि दुखउ दुखित
मोहिंहेरे । नामप्रसाद लहतरसालफल अबहौं बबुरबहेरे ।
साधतसाधु लोकपरलोकहिसुनिगुनियतनघनेरे । तुलसीको अव-
लंबनामहिकोएकगांठिकेहिफेरे ॥ २२७ ॥

टी० । पूर्वकह्यौ जो अपनो हृदयसोई फेर कहतहैं स्वारथसंबन्धी
जोपिता मातादि अरुपरमारथ संबंधी जोसाधु ब्राह्मणआचार्यगुरु
तेहते पुकारि भुजा उठायकरि कहतहौं कि मेरो हितकारी केवल
रामनाम है माता पिता हितकारी प्रसिद्ध हैं सो जननि नाम जन्म
दैकरि कर्मबिनु नाम भाग्यहीन बूझित्यागकियौ बिधिहुं नामब्रह्मा
जूसब जीव कौं दुख सुख जैसो लिखिदेत हैं सो भोग करत है सोउ
सोको उत्पन्नकियौं पर अड़ेरे नाम बिरादर रूप अर्थात् जगत को
तिरस्कार सहनो यही मेरे भाग्यमें लिख्यौ तो जगतपिता ब्रह्माजू
तेहिकी यह करनी अरु माता पिता त्यागै कियौ ऐसेउ अभागे कौं
कोउ २ जगतमें रामजूकोदास कहत है सो केहके प्रसंगते अर्थात्
जेहरामजूके दासभावकी शिवादिबड़ाई मानत हैं सोमोहूंसे अभागे
कौं जगतराम गुलाम कहतहै सो केवल नामके अवलंबकरि यावत
नामाश्रय नरह्यौ तावत केवल पेटके अर्थललात फिर्यौ नाम याचत
फिरतरह्यौ सोको देखिदुख काहू दुख होतरह्यौ सोईमैं अब नामके

प्रसादते बबूर बहेरे के पेड़ते आमकी फल पावतहैं अर्थात् जो दुष्ट तब गालीधक्का देतरहे सोपूजा करतहैं साधुजो महान सो शास्त्रसुनि अरु आप गुनिकरि अनेक यत्नतें लोक परलोक को साधन करत हैं अर्थात समर्थ शास्त्रज्ञ जोसाधु तेहिके निमित्त अन्य अनेक साधन हैं पर तुलसी ऐसेमन्द जीवकौं तौ नामैको अवलंब है जैसे कोटि फेरतें जौ परिणाम ताको एक गांठिबे कहतहैं जैसे अनन्त साधन सुनत हौं पर विश्वास नामहीं सोहै ॥ २२७ ॥

मू०। प्रियरामनामतेंजाहिनरामो । ताकोभलो कठिनकलि
कालहुंआदिमध्यपरिणामो।सकुचतसमुझिनाममहिमामद
लोभमोहकोहकामो । रामनाम जपनिरतसुजनपरकरत
छांहघोरघामो।नामप्रभावसहीजोकहैकोउसिलासरोरुह
जामो । सुनि जेसुमिरि भागभाजनभई सुकृत सीलभील
भामो । वाल्मीकअजामिलके कछुहुतोनसाधनसामो ।
उलटेपलटे नाम महातम गुञ्जानिजितोललामो । रामतें
अधिकनाम करतबजेहिकिये नगरगतगामो ।भयेबजाइ
दाहिनेजोजपि तुलसिदाससेवामो ॥२२८॥

टी०। जेहि जीवकौं रामनाम तें प्रिय अधिक श्रीरामजू भी नहीं ताको कठिन कलिकालहू मो आदि मध्य परिणाम नाम अन्त तीनों काल मो भलो होत है नाम के महिमा कौं समुझ कामादि जो निषेध रूप सोऊ सकुचतहैं अर्थात् अपनी प्रभुता नहीं करिसकत तथा राम नामके जपमो तत्पर जो सुजन तेहि पर भयानकजोघाम सोउ छांहकरतहै अर्थात् दुखरूपजोसंसार सो सुखरूपहोतहै नामके प्रभावतें पत्थरकेऊपर कमलजामोनाम उत्पन्न भयौ ऐसउ आश्चर्य जो कोउ कहै तौ सहीनाम सत्य है काहेकि दण्डकारण्यमो मतङ्गऋषि के मुखतें रामनामको महिमा सुनि स्मरण करि भीलजाति की भामो नाम की जो शवरी सोऊ शील अरु पुण्य तथा सौभाग्य की पात्रभई यह प्रसिद्ध है बाल्मीक अरु अजामिल कौं नाम छोड़ि कोउ साधन की सामो नाम सामग्री न रही पर उलटेनाम के महिमातें बाल्मीक अरु पलटेनाम पुत्रके हेतुतें अजामिल कहिकरि गुञ्जनिनाम घुंघुची सों ललामो नाम सुन्दर जो जवाहिरादिमणि ताकों जितोनाम जीततभये अर्थात् पहिले घुंघुचीतुल्य तुच्छरहे सोई जवाहिर जैसे

राजिन्हके मस्तकपर चढ़तहैं तद्वत् ब्रह्माण्ड पूज्य भये रामजू तें अधिक नामकी कर्तव्यता विदितहैकि गामोनाम गवंईकेरहनेवाले जे। लन्दजीव ऐसे अनेकनकौं नगरगतनाम सहरमें प्राप्तकरि बसाये अर्थात् अतिअधम संसारीजीव यमनादि मोक्ष वैकुण्ठबासी भये तथा बजायनाम डङ्कादेकर तुलसीदासहू सेवामें। नाम बिमुख मो जेहनाम के जपि दाहिनेनाम सन्मुख होतभये अर्थात् भाग्यहीन तें दोऊलोक परलोक के ऐश्वर्य प्राप्तकरि अत्यन्त भाग्यवान भये यह अर्थ है ॥ २२८ ॥

मू०। गरैगीजीहजोकहौंऔरकोहौं। जानकीजीवनजन्मजन्म जग
ज्यायातिहारेहिकौरकौंहौं। तीनलोकतिहूंकालनदेखत
सुहृदरावरेजोरकोहौं। तुम्हमोकपटकरि कल्प कल्प कृमि
ह्वैहौंनर्कघोरकोहौं। कहाभयौजौंमनमिलि कलिकालहि
कियौभुरुटभोरकोहौं। तुलसीदासप्रीतलनितियाहिबलबड़े
ठिकानेठौरकोहौं ॥ २२९ ॥

टी०। औरकोहौं यह जो कहूं तौ जीभगिरपड़ेगी हेजानकी जीवन जगत के विषै जन्मजन्ममें तुम्हारही कौरको नाम जूठन को जिलायौ हौं तीनोंलोक तीनोंकाल मो रावरे जोरको नाम सदृश अपने। सुहृदनाम हितकारी नहीं देखतहौं तब तुम ऐसे स्वामीसों कपटकरि नाम जौं झूठबनाय कहत होंउगे। तौकल्प कल्पमें भयानक जोनर्क तेहि विषै कीटह्वैरहूंगे। कहा भयौ जो यह मेरोमन कलिकालतें मिलिकरि प्रातःकालमें जैसे भुरुट को कांटा तद्वत् मोकौं कियौ अर्थात् भोरसमयमें भुरुट को कांटा गड़तनहीं अति असमर्थ होतहै तद्वत् मनमेरो कलिकालतें मिलि नाम एक होकरि जीवरूप जो मैं ताकौं सुखसाधन रहितकरि पौरुषहीन कियो तौ कहाभयौ नाम यह कि मोकौं चिन्तानहीं यहा भुरुटको कांटा भोरको सूर्यके निकलते पैरमें लग्यौ ताकौं जो हाथतें छुड़ावै तो हाथलो लगिजाय जौने अङ्गमें स्पर्श होय तहांतें छूटतनहीं तद्वत् मनमेरो अरु कलिकाल दोऊमिलिकरि मैं जो जीवरूप ताकौं विषयमें लगायदियो अर्थात् विषय रूप ह्वैगयौ तदपि तुलसीदास नितप्रति प्रीतलरहतहै यहबलतें कि बड़ेठिकानेठौरनामजगहकोमैंहौंअर्थात् रामजूकौंगुलामहौंमेरो कलिकाल कहा करि सकैगो यह विचारतें सुखीरहतहौं २२९॥

मू० । अकारणकोहितु औरकोहै । बिरदगरीबनिवाज कौनकौ
भौंहजासुजनजोहै । छोटोबड़ोचहतसबस्वारथ जो बिरञ्चि
बिरचोहै।कोलकुटिलकपिभालुपालिबोकौनकृपालहिसोहै।
काकोनामअनखआलसकहेंअघअवगुननिबिछोहै।कोतुलसी
कुसेवसंग्रह्योशठसबदिनसाईंद्रोहै ॥ २३० ॥

टी० । बे प्रयोजन हितकारी तथा गरीबनेवाज दूसरो को है जाके कटाक्ष कों यह जन जोहै नाम दास देखि छोटेबड़े जितने को ब्रह्मा उत्पन्न कियेहैं सोसब अपने स्वारथको चाहतहैं कुटिल जो कोलभील अरु बानर भालु को पालन करनो कौन दूसरे कृपालु स्वामीको सोहतहै केहिका नाम अनख अरु आलस्यकरिकै ते पाप अवगुणते बिछोहै नाम वियोगकरैहै तथा तुलसी ऐसेकुसेवक शठ सबदिन साईंद्रोहे नाम स्वामीजो आप तातेबिमुखरहै ऐनजको जाके नाम ने संग्रह कियो अर्थात् पूर्वोक्त बिचारि आपको त्याग करि अन्यच जानेवालो नहीं यह भाव है २३० ॥

मू० । औरमोहिंकोहैकाहिकहिहौं । रङ्कराजज्यौंमनकोमनोरथ
जेहिसुनाइसुखलहिहौं। यमजातना योनि संकटसब सहेहैं
दुसहअरुसहिहौं । मोको अगम सुगमतुम्हको प्रभुतउफल
चारिनचहिहौं। खेलिबेकोखगमृगतरुकिङ्करह्वै रावरोराम
होरहिहौं । यहिनाते नरकहुंसचुपैहौं याबिनपरमपदहुं
दुखदहिहौं । इतनीजियलालसादासकेकहतपानहीगहि-
हौं दीजैबचनकिहृदयआनियेतुलसीकोपननिर्बहिहौं२३१ ॥

टी० । और मोको कोहै रंक होकरि राजाकी नाईं मन को मनोरथ अर्थात् तुच्छविषे संसारको प्राप्त नहीं इच्छा बैकुण्ठादि की करतहैं ऐसी कामनादुर्घट जेहको सुनायकरि सुखपाऊं सो दूसरो आप छोड़ि कोहै नाना नर्कादि पीड़ा अरु गर्भबास को संकट सहवे योग्य नहीं सो भूतकालमें सहेहैं अरु आगेसहूंगो यह की चिन्ता नहीं तथा अर्थ धर्म काम मोक्ष चारोंफल हमको अति कठिन पर तुमको देवेको सुगम है तऊ नहीं चाहतहैं जो मोक्षादिकी इच्छा नहीं तो विनय काहेकरतहो तेहपर कहत हैं कि हेराम तुम्हारे खेलबेको पशु पक्षी वृक्ष नौकरह्वैकरि रहूंगो यहि नाते नाम तुम्हारो पशुपक्षी होकरि नर्कहूमें जोरहौं तो सचुनाम सुखहै अरु याबिननाम तुम्हारे सम्बन्ध हित मोक्षऊहोय

तो दरखतें जलुंगो यहू दासको इतनी जियमेलालसाहै सोकहत हैं कि आपको जूतीलियेरहुंगो सोकृपाकरि बचनदेव चेतप्रकट न कहो तोतुलसीको हृदयमो लेआवो नाम अपनो दास मानो पनर्निर्वहिहौं नाम मैं तुम्हारे गुलाम होवे को पनकिये हौं सो अपने ओरतें निबाहुंगो सो मेरो हठबूझि कृपा करो यह विनय है यद्यपि मेरेपनको तुमहीं निबाहोगे यह प्रतीतिहै ॥ २३१ ॥

मू०। दीनबंधुदूसरोकहंपावौं। कोतुमबिनुपरपीरपाइहै केहि
दीनतासुनावौं। प्रभुअकृपालकृपालअलायकजहं२ चितहि
डुलावौं। इहै समुझि सुनिरहौं मौनही कहिभ्रम कहा
गवावौं। गोपदबुड़िबेयोगकरमकरोंबातन्हिजलधिथहावौं।
अतिलालचीकामकिंकरमनमुखरावरोकहावौं। तुलसी
प्रभुजियकीजानतसबअपनोकछुकजनावौं। सोइकीजैजेहि
भांतिछांड़िछलद्वारपरेगुणगावौं ॥ २३२ ॥

टी०। दीनबंधु दूसरो कहांपाऊंगो तुमबिना परकोपीरनाम दुखपाइ है नामको जानेगो अर्थात् ऐसो आपैहो तो मैं अपनी दीनता दूसरे कहतेसुनावौं अन्य जोकोउ प्रभुहै सो कृपालु नहीं जोकृपालुहैं सोअलायकनाम समर्थनहीं जहां २ चितकोडुलावौं नाम लैजातहैं तहां २ ऐसोईदेखतहैं यहासमुझि तथा सुनिते सुनि चुपह्वैरहतहैं कि व्यर्थ अन्यतेकहि अपनो भ्रमनाम आदर काहेको गवाऊंनाम नाशकरूं मेरी अधमता ऐसीहै कि गाईके खुरके जलमो बूड़िबेयोग्य तो कर्मकरत हैं अरु बातन्हतें समुद्र को थाहलेतहैं अतिलालची कामना को किंकरमनते बनो हैं केवल मुखतें तुम्हारो कहावत हैं आप अन्तर्यामी जियकी सब जानतहै तथापि तुलसी अपनी अधमाई कछुजनावैहै कि निष्कपट विनय सुनिकरि सो आपकरो जेहते नानावासना रूप छल छांड़ि आपके दरवाजेपरपरि गुणगावतरहूं अर्थात् अन्तर्यामीहै जैसो प्रेरणाकरोगे तैसी वृत्तिहोयगी यहविनयहै ॥ २३२ ॥

मू०। मनोरथमनकोएकैभांति। चाहतमुनिमनअगमसुकृतफल
मनसाअघनअघाति। कर्मभूमिकलिजन्मकुसंघटमतिविमोह
मदमाति। करतकुयोगकोटिक्योंपैयतपरमारथपदशांति।
सेइसाधुगुरुसुनिपुराणश्रुतिबूझ्योरागबाजीतांति। तुलसी
प्रभुसुभाउसुरतरुसोज्यौंदर्पणमुखकांति ॥ २३३ ॥

टी० । यह अधमसन के एतैभांति मनोरथ है कि मुनिन्ह के मनके अगम जो पुण्यके फलसे मनतें चाहत हैं पर पापकर्म्मिबे तें तृप्त नहीं होते एकतो पापरूप कलिकाल मे जन्मस्थान कर्म्मभूमि भरतखण्ड ऐसी जहांकी कर्तव्य निःफल नहीं होती तहां रहि कुसंघट नाम पापरूप करनी तथा बुद्धिमोह अरु मदकरि मातिरही है कठिन कुयोगकरते परमार्थ पदकी शांति कैसेपावें साधुन्हकी सेवाकरि गुरुके मुख वेदपुराण सुनिबूझे जैसे लोक मे प्रसिद्ध है कि तांतिबाजी रागबूझ्यो अर्थात् जैसें बाजाकेबजेतें राग को ज्ञानहोतहै तैसे वेदादिके श्रवणतें यह निश्चयभयो कि प्रभुको स्वभाव कल्पवृक्ष सहशनाम जैसो अभिलाषकरै तैसोपावै तथा जैसे दर्पण विषे मुखकी कान्ति नाम टेढ़ो सूधो जैसो मुखकरै तैसोई देखिपड़ै है अर्थात् आपमनहो विषम स्वभाव नहीं अपनी करनी तें जीव दुख सुखको भागी होत है २३३ ॥

मू० । जन्मगयोबादिहिंबरबीतिं । परमारथपालेनपस्यौकछुअनुदिनअधिकअनीति । खेलतखातलरिकपनगोचलिवौवनयुवतिन्हलियोजीति । रोगवियोगशोकश्रमसंकुलबड़ीवयवृथहिअतीति । रागरोगईर्षाविमोहबसरुचीनसाधुसमीति । कहेनसुनेगुणगणरघुपतिकेभइनरासपदप्रीति । हृदयदहतपछितायअनलअबसुनतदुसहभवभीति । तुलसीप्रभुतेंहोइसोकीजियसमुझिबिरदकीरीति ॥ २३४ ॥

टी० । परमारथ तें विमुख होय रोजरोज अनीति करते श्रेष्ठ मनुष्यको जन्मसो व्यर्थगयो पहिले तुम्हसो बाल्ययुवाको व्यर्थ कहे अरु बड़ी वैसनाम युवातें ऊपर वृद्धावस्था पर्यन्त सो अनेक रोग वियोगनाम स्त्री पुत्रादिके नाशतें शोकश्रमनाम जीविका के अर्थ अनेक परिश्रम याहीतें संकुलनाम व्याप्तव्यर्थ अनीतिं नामबीति गई रोगादि के वसभये अरु साधुन्ह की समीति नाम सभा यद्यपि समत सों रुचीनहीं अगिलो तुकसुलभहै अब पौरुषहीनभये कछु भलो करनो करबे की शक्ति नहीं सज्जन के मुखते दुसह संसार को भयसुनत पश्चात्तापरूप अग्नितें हृदयजरतहै अब हेप्रभुअपने बिरदकीरीतिसमुझि तुलसीको जो इच्छाहोय सो करो २३४ ॥

मू० । ऐसेहिजन्मसमूहसिराने । प्राणनाथरघुनाथसेप्रभुतजिसेवतचरणबिराने । जेहजड़जीवकुटिलकायरखलकेवलकलिमल

साने। सुखतबदनप्रशंसततिन्हकहंहरितै अधिककरिमाने। सुखहितकोटिउपाय निरन्तर करतनपायपिराने। सदामलीनपन्थकेजलज्योंकबहुंनहृदयथिराने। यहदीनता दूरिकरिबेकोअमितयतनउरआने। तुलसी चित चिन्ता नमिटैबिनुचिन्तामणिपहिचाने॥ २३५॥

टी०। जन्मकी व्यर्थता देखावतहैं अतिमन्दजीवन्ह की प्रशंसा करत सुखमुखत है अरु भगवानतें अधिककरि मानतहौं यहमेरी अधमता सुख के निमित्त सदा कोटिन्ह उपाय करत पांव नहीं दुख्यौ अरु कबहूं हृदय थिरानेनाम थिर न भयो सर्वदा रास्ताके जलकी नाईं मलिनबनोरह्यौ अर्थात् रास्ताको जल जबथिरहोने लग्यौ तबदूसरो राहगीरआयौ फेरमैलो ह्वैगयो तैसे एक मनोरथ समाप्त भयो हृदय थिर होने चाह्यो तावत् दूसरी कामना उठी फेर मैलेको मैलो यहदशाहै अपनी दीनता दूरि करिबेको यतनतें मैंने बहुतकरी परंचिन्तामणिरूप जोआप ताकेपहिचाने व्यतिरेक चित्तकी चिन्ता मिटनेवालीनहीं यहतुलसीको निश्चय है सोऐसी कृपाकरो कि हमतुमकोपहिचानें यहबिनयहै२३५॥

मू०। जौंपैजियजानकीनाथनजाने। तौसबकर्मधर्मश्रमदायकऐसेइकहतसयाने। जेसुरसिद्धिमुनीशयोगबिदबेदपुराणबखाने। पूजालेतदेतपलटे सुखहानिलाभ अनुमाने। काको नामधोखेहूंसुमिरतपातकपुञ्जसिराने। बिप्रबधिकगजगृद्धकोटिखलकौनकेपेट समाने। मेरुसे दोषदूरिकरिजनकेरेणुसेगुणउरआने। तुलसिदासतेहिसकलआसतजिभजहिं न अजहुँसयाने॥ २३६॥

टी०। भगवत् स्वरूप ज्ञान व्यतिरेक सब कर्तव्य व्यर्थ हैं यह महात्मन्ह को सम्मत है जितने देवादि समर्थहैं सो पूजा लेकरि ताके बदलेमें सुख देतहैं अपनी हानिलाभ अनुमानकरि ऐसा वेद पुराण कहतहैं धोखेहूं जाको नाम स्मरण किये पाप समूह नाशहोतहैं काहे कि अजामिलादिकौनकेपेट समानेनाम हृदयमें प्रवेशकिये अर्थात् मुक्तभये ऐसोदूसरोकोहै स्वामीको गुणविचारि अबहूं भजन करु रेअज्ञान यह तुलसीदास कहतहैं॥ २३६॥

मू०। काहेनरसनारामहिंगावहि। निशिदिनपरअपवादवृथाकतरटिरटिरागबढ़ावहि। नरसुखसुन्दरमन्दिरपावनबसिजनि

बसहि लजावहि । शशि समीपरहि त्यागि सुधा कत रविकर जल कहँ धावहि। काम कथा कलि कैरव चन्दिनि सुनत श्रवण दै भावहि। तिनहिं हटकि कहि हरि कल कीरति कर्ण कलङ्क नशावहि। जात रूप मति युक्ति रुचिर मणि रचि रचि हार बनावहि। शरण सुखद रवि कुल सरोज रवि राम नृपहि पहिरावहि। वाद विवाद स्वाद तजि भजि हरि सरस चरित चित लावहि। तुलसिदास भव तरहि तिहूं पुर तू पुनीत यश पावहि ॥ २३७ ॥

टी०। जिह्वाकों उपदेश करतहैं मनुष्य को मुखसुन्दर अरु पावन मन्दिरहै तामे बसिताको लजावै मतिरे जिह्वा अर्थात् भगवत्नाम गुणत्यागकरि व्यर्थबार्ता मतिकरु चन्द्रमाकेनिकटरहि अमृत त्याग करि मृगतृष्णाके जलकों क्यों दौड़ै है इहां चन्द्रमाकेसमीप तुल्यमुख अमृतसदृश भगवत्यश मृगतृष्णासम विषयबार्ता यहसमता है अब कामको उपदेश करतहैं कामकीकथा कलिकालरूपकोई को चन्दिनि नाम चकोरीरूप सो श्रवणदै सुनत भावैहै ताकों हटकि नामडाटि करि हरिकी मधुर कीर्ति कहि कानके कलङ्ककों नाश करु अर्थात् जगत् प्रपञ्च श्रवण करनो यह कर्णकों कलङ्करूप है यह तुमसों बुद्धिकों शिक्षादेतहैं अरी बुद्धि रूप युवती जातरूप जो सोना ताके तुल्य भगवत् यश अरु सुन्दरमणि तुल्य नाम वाहीको रचिरचि नाम अर्थ शब्दको योजनाकरि सोई हार बनाय शरण जीवकों सुखदाता सूर्य कुल कमल के सूर्य जो रामराजा ताकों पहिराव इहां उपमा जो सोना अरु मणि सो कहै उपमेय जो भगवत् नाम अरु गुणसो नहीं कहै यहते उपमेय लुप्तालङ्कार है संसार प्रपञ्च त्यागकरि राम यशमें चित्त लगावै परिश्रम संसार पार होयगो अरु त्रिलोकीमें तू यश पावेगो यह तुलसी की शिक्षाहै रेजीव ॥ २३७ ॥

मू०। आपनो हित रावरे सों जौ पै सूझै। तौ जनु तनपर अछत शीश सुधि क्यों कबंध ज्यों जूझै। निज अवगुण गुण रामरावरे लखि सुनि मति मन रूझै। रहनि कहनि समुझनि तुलसी की को कृपाल बिनु बूझै ॥ २३८ ॥

टी० हे रघुबर अपनो हित तुमसों जो सूझै तौ जैसे शरीर पर माथे के रहते सुधिनाश जीवत जानतहूं कबन्धकी नाईं क्यों जूझै अर्थात् माथहीन जो कबंध सो संग्राममें दौड़तहै पर कछू पौरुष नहीं करि सकत अरु मस्तक जाको विद्यमान सो कबन्ध रहैश नेपौरुष होय

तौ निन्दाको पावहै तैसे साधरूप तुम्हारो सदृश अंशआत्माके विद्यमान रहते कबन्धकी नाईं बेपौरुष अर्थात् अपने कल्याण को जो अनेक साधन तेहको बिन किये जूझतहौं नाम जन्म मरण होत है यहमेरी मन्दताहै अपनो अवगुण तुम्हारो गुणसुनि जानि मेरो मन मतिरूझै नाम मोहित होतहै अर्थात् आपकी बड़ाई सुनतहौं अरु अपनी छोटाई देखावतहौं तौमेरी बुद्धिहारिमानतिहै तथापितुलसी की रहनिकहनि ससुझनि कृपालु जो आपतेइ बिनु कोबूझै अर्थात् हम ऐसे तुच्छ जीवन्हकेभी गतिदाता आपैहौ ॥ २३८ ॥

मू०। जाकोहरिदृढ़करिअंककरयौ। सोईसुशीलपुनीतवेदबिद्विद्या गुणनि भरयौ। उत्पतिपंडुसुतनकीकरणीसुनि सतपंथडरयौ। ते त्रैलोक्यपूज्यपावनयशसुनिसुनि लोक तरयौ। जो निजधर्म वेद बोधितसोकरतनकछुबिसरयौ।बिनअवगुणकृकलासकूपमज्जत करगहि उधरयौ। ब्रह्म बिशिष ब्रह्मांगडदहनक्षमगर्भनृपति जरयौ। अजरअमरकुलिशहुनाहिनवधसोपुनिफेनमरयौ। बिप्र अजामिलअरुसुरपतितेकहाजोनहिं बिगरयौ। उन्हको कियो सहायबहुतउरकोसन्तापहरयौ। गणिकाअरुकन्दर्पतेजगमहं अघनकरत उबरयौ। तिनको चरितपवित्रजानिहरिनिजहृदि भवन धरयौ। केहि आचरणभलोमानैंप्रभुसोतोन जानिपरयौ। तुलसीदासरघुनाथकृपाको चितवतपंथखरयौ ॥ २३९ ॥

टी०। जाको भगवान् दृढ़करि अंगकरयौनाम अपनो कियो सोई सर्वगुणको पात्रहै पूर्व कह्यौ जो सिद्धान्त तामो युधिष्ठिरादि पांचो भाईको प्रमाणदेतहैं ताकीकरणी अरु उत्पत्ति पीछे लिखि आयेहैं वेदाज्ञा जो अपनो धर्म सो सब कियौ तब तौ बिना अपराध कृकलास नाम गिरगिटको रूप ह्वै मज्जत नाम नृगराजा कूपमो डूब्यौ और जब गिरगिटको देह अति मन्द जामो कोऊ करणी नहीं तब हाथते पकड़ि उद्धार करत भये ब्रह्म विशिख नाम ब्रह्मास्त्र ब्रह्मांगड के जरायबेको क्षमनाम समर्थ तेहिते गर्भ बिषें नृपति जो परीक्षित सो नहीं जरे तथा बरदानके प्रभावते जरामरण रहित इन्द्रके बज्र करि जाको बध न भयो सो नमुचि जो असुर देवासुर संग्राम सो फेर फेनते मरयौ अजामिल अरु इन्द्रते कौन ऐसो कर्तव्यताहै जो न बिगरयौ अर्थात् वेश्याके पीछे अजामिलने सब निषेध कर्मकरे तथा इन्द्रके निषेध रूप प्रसंग अनेकन्ह पुराणादि मो लिख्यौ है विशेष ते

अहिल्याको प्रसंग सबको विदित है तेहि इन्द्रको बहुत सहाय कियौ अरु अजामिल को सन्ताप हरणकरि गणिका अरु कन्दर्प ते जगत विषे कोऊ उपाय करते न बच्यौ तिनको पवित्र चरित जानि अपने हृदयरूप मन्दिरमो धर्‍यौ अर्थात् एकादश स्कन्धमो उद्धवजूको उपदेशमो वैराग्यकी दृढ़ता निमित्त गणिकाके अरु साधुताकी अवधि जो सहन धर्म तामो कन्दर्पको उदाहरण दिये पूर्वोक्त अनेक हेतुन्ह करि नहीं जानिपर्‍यौ कि कौने आचरणते प्रभु भलो मानतहैं यह हेतुते अपनी कर्तव्यताको भरोसा त्याग करि तुलसी दास खड़ो ह्वै रघुवर कृपाकी राह देखि रह्यौहै ॥ २३९ ॥

मू०। सोइसुकृतीसुचिसांचोजाहिरामतुमरीझे। गणिकागीधबधिक
हरिपुरगयेलैकरसीप्रयागकबसीझे। कबहुंनडग्यौनिगममगते
पगनृपजगजानिजितेदुखपाये। गजधौंकौनदिक्षितजाकेसुमिरत
लैसुनभबाहन तजिधाये। सुरमुनि बिप्रबिहाइ बड़ेकुलगोकुल
जन्मगोपगृहलीन्ह्यौ। बायौं दियोबिभवकुरुपतिकोभोजनजाइ
विदुरगृह कीन्ह्यौं। मानत भलहि भलोभक्तनितें कछुकरीति
पारथहि जनाई। तुलसी सहज सनेह रामबस औरसबै जलकी
चिकनाई ॥ २४० ॥

टी०। पूर्व कह्यौ जोमन वचनकरि अगोचर भगवत् ऐश्वर्य ताको दृढ़ करत हैं पहिले तुकमो ब्रजबासिन्ह को प्रसंग दूसरे मो विदुरजु को जनावत हैं कुरुपति जो दुर्योधन ताकौं ऐश्वर्य बायौंदियौ नाम बिमुखकियौ विदुरके घरजाय भोजन कियौ ताहू पर विदुरकी स्त्री केला छीलि छीलि भोजन करावनेलगी भगवत् स्वरूपदर्शन के अति आनन्द अरु प्रेमके प्रवाहतें शरीर भूलिगयो कि मैं कौनहूं कौन कार्य करूंहूं यह खबर नरही केलाको फलरूप सारांश तो पृथ्वीमो डारिदयो अरु छिलका भगवानके हस्तमो खानेकों देतभई वासमय बिदुर जो आये यह उलटी कर्तव्यता देखि अपनी स्त्रीकों कहनेलगे कि अरी अभागी तू ऐसे सुकुमार त्रैलोक्यनाथ कों अतिकठोर अरु अवस्तु जो छिलका सो खिलावे है अरु जो खिलायवे की वस्तु सो पृथ्वीमो डारेहै तेरेहाथ अरु बुद्धि जलिजांय यह कहि बहुत क्रोध करि उठायदिये आप बैठि भगवान कों केला खिलावने लगे एकबार फलको खाय तब स्वामी बोले कि जो स्वाद छिलकेमो मिल्यौ सो फल मो नहीं है अब न खाऊंगो यह प्रीतिकी परवसता है भली प्रकार

भक्तन्हतें भलो मानतहैं सो कछु करीति पारथनाम अर्जुन कों जनाई अर्थात् ब्रह्मादिक जाके दासभाव को दुर्लभ मानत हैं सोई सारथी भयो दूतभयो ऐसो कौन काम जो न कियो सो महाभारत के सुने देखे जानिपरै है यह हेतुन्ह करि तुलसी को निश्चयहै कि सहजस्नेह के आधीन श्रीरघुबरहैं रामानुरागतें अन्य जितने साधन सोजलकी चिकनाई हैं नाम जल शरीरपर पड़े है वायुके लगतें सूखिजाय है फेरलखड़े को लखड़ा यद्दा वायुबन्द भये जल चिकनो लागत है फेर किंचित वायुको संयोग अथवा काहूवस्तु का स्पर्शभये चिकनई नहीं रहत तद्वत भगवत् भक्ति त्यागकरि और जो साधन सो नश्वर सुखके दाता हैं यद्दा श्री रामजू को अनुराग त्याग करि और जितनी स्त्री पुत्रादिविषे प्रीति अरु ममता सो जलकी चिकनाई नाम क्षणिक हैं यह सिद्धान्त कियो ॥ २४० ॥

मू०। तबतुममोहूसेसठनिहठिनगतिदेते। कैसेहूंनामलेतकोउपांवर
सुनिसादरआगेह्वैलेते। पापखानिजियजानिअजामिलयमगण
तमकितइतायोभेते। लियेछड़ाइचलेकरमीजतपीसतदांतगये
रिसिरेते। गौतमतियगजगृद्धविटपकपिहैनाथहिनीकेमालुमतेते।
तिन्हतिन्हकाजनिसाधुसमाजतजिकृपासिन्धुतबतब उठिगेते।
अजहूंअधिकआदरयाहिद्वारेंपतितपुनीत होत नहिंकेते। मेरे
पासंगहूं नपूजितैं ह्वैगयेहैं होने खलजेते। हौं अबलौं करतूति
तिहारियै चितवत तौन रावरेचेते। अब तुलसी पूतरा बांधि
हैसहिनजातमोपैपरिहासएते ॥ २४१ ॥

टी०। तब तुम मोहूं से सठन्हकों हठकरि गति देते नाम दियेही बनेगो काहेकि कैसउनीच काहूप्रकार नामको ग्रहणकरे सो सुनि करि आदर पूर्वक आगे ह्वै लेते नाम अपनो स्थान देतहो पापरूप अजामिल को जानि यमदूत तमकिकरि तद्दैनाम तापदेतभये ताको भेतेनाम तेह यमदूतन्ह के भयतें अजामिल को छोड़ायलिये यमगण हाथमलत दांतपीसत रिसरेते नाम क्रोध त्यागकरि चलेगये यद्दा रिसतें दांतपीसत रेते नाम अजामिल बिन खाली गये अहिल्यादि जैसे धर्ममूर्ति सो स्वामीको तेतेनाम तौन सबनकी प्रकार मालूमहै तेह २ के कार्य करबेको साधुन्हकी समाज छोड़िकरि हे कृपासिंधु तहां तहां तौन तौन कालमो आप उठिकरि गयेहो अबहूं अनेक पतित यहि दरवाजे पर पुनीतहोत हैं सो जितने भये अरु हैं तथा

होंगे सोमेरे पासंगहु न पूजिहैं अर्थात् सबको मैं राजाहौं हम अब तक तुम्हारी कृपालुतारूप कर्तव्यता चितवतनाम देखतरहे कि अब होयगो पर रावरे जेते नाम पतितपावनादि बाना आप मेरी बार न स्मरण किये अब तुलसी पूतरा बांधिहैं अर्थात् भाटसब राजन्हके ड्यौढ़ी पर जब अपनो मांग्यो न पावत हैं तब दिनहीं को मसाल जलावैं हैं इत्यादि अनेक कर्मकरत हैं तइत मैंहूं करूंगो काहे कि इतनो परिहास मोपै सह्यो न जातहै अर्थात् जगत ताकीदै हंसत है कि जो जो अधम पतित दीन जीव रघुबर के शरणगये सो सब कृतार्थभये यह ऐसो भाग्यहीनहै कि स्वामी याकीओर देखतेनहीं यह जगतकी हंसी अब नहीं सहिसकतहूं हे स्वामी ॥ २४१ ॥

मू०। तुमसमदीनबंधुनदीनकोउमोसमसुनहु नृपति रघुराई। मोसम
कुटिलमौलिमणिनहिंजगतुम्हसम हरिनहरण कुटिलाई। हौं
मनबचन कर्म पातकरततुम्ह कृपालु पतितन्हि गतिदाई। हौं
अनाथप्रभुतुम्हअनाथहितचितयह सुरति कबहुं नहिंजाई। हौं
आरतआरतिनाशततुम्हकीरतिनिगमपुराणनिगाई। हौंसभीत
तुमहरणसकल भयकारण कवनकृपा बिसराई।तुम्ह सुखधाम
रामश्रमभञ्जनहौंअतिदुखितत्रिबिधिश्रम पाई। यह जियजानि
दासतुलसीकहंराखहुशरणसमुझिप्रभुताई ॥ २४२ ॥

टी०। हम दीनताकी अवधि आपदीनबंधुताके सींवाहौ अरु मैं कुटिलनको मुकुट आपसम कुटिलाई दूरकरने वालो नहीं हमपतित आप पतितपावन मैं अनाथ तुमअनाथ हित यह सुरतिचिततैं कबहूं भूलति नहीं मैं आरत अरु आपको कीर्ति नाशक वेदादि गावै हैं हम संसारतें डरआप सब डरके छोड़ावने वाले केहि कारण कृपाको भुलाये हौ तुम सुखरूप मैं दुखित आप श्रमके नाशक हम त्रिताप रूप श्रम पाये हैं यह सब सम्बन्ध अरु अपनी प्रभुता विचारि तुलसी को शरणमें राखो हे प्रभु ॥ २४२ ॥

मू०। इहैजानिचरणनिचितलायौ। नाहिंननाथअकारणकोहिततुम्ह
समानपुराण श्रुतिगायौ। जननिजनकसुतदार बन्धुजनभये
बहुतजहंजहंहौंजायौ। सबस्वारथहितप्रीतिकपटचितकाहू
नहिं हरिभजन सिखायौ। सुरमुनि मनुजदनुज अहिकिन्नर
मैंतनधरि शिरकाहिननायौ। जरतफिरत त्रयतापपापबस
काहूनहिंकरिकृपाछुड़ायौ। यतनअनेककियेसुखकारणहरि

पदविमुख सदादुखपायौ। अयथाक्यौंजलहीननावज्यौं देखत विपतिजाल जगछायौ। मोकहं नाथबूझिये यह गति सुख निधान निजपतिबिसरायौ। अवतजिरोष करहुकरुणाहरि तुलसिदासशरणागतिआयौ॥ २४३॥

टी०। कारण रहित हितकारी दूसरो नहीं याहीबूझि आपै के चरणसे।चितलायो जितनेजगत संबन्धीसो सब स्वारथी तिन्हकी कपटकी प्रीतिहै काहेकि भगवत् भजन करबेको कोऊने न शिक्षा कियो देवादिजितने ऐश्वर्यवान ताकोमें मिलत भयौं परकाहू ने मोको न शीतल कियौ सुखके निमित्त यत्न अनेक किये पर तुमतें विमुखदु:खपायौ अवसमस्त जगत विपत्ति जालतें छायौ देखि सुखे पृथ्वी मे नाव सदृश थक्यौ अर्थात् पौरुष हीन भयो सुख के पात्र अपने स्वामी आपताको विस्मरण किये तौमोको दुखरूप गतिहै नाथ बूझियेनाम उचित है पर अवमेरी कर्तव्यता को विचार जो क्रोधसो त्यागकरि कृपाकरौ हेहरि तुलसीदास अव आशा छोड़ि करि आपके शरण प्राप्त होवेको आयो है॥ २४३॥

मू०। याहितेंमैंहरिज्ञानगंवायौ। परिहरिहृदयकमलरघुनाथहि बाहिरफिरत विकलभयोधायौ। ज्यौंकुरंग निज अंगरुचिर मदअति मतिहीन मरमनहिं पायौ। खोजत गिरितरुलता भूमिविलपरमसुगंधकहंतेंधौंआयौ। ज्यौंसरविमलवारिपरि पूरण ऊपर कछुसिवार तृण छायौ। जारत हियौ ताहि तजिहौंशठचाहत यहिविधितृषाबुझायौ। व्यापति त्रिविधि तापतनदारुणतापरदुसहदरिद्रसतायौ। अपनेहिंधामनाम सुरतरुतजिविषय बबूरबागमनलायौ। तुमससज्ञान निधान मोहिंसम मूढ़नआन पुराणनिगायौ। तुलसिदासप्रभु यह विचारिजियकीजैनाथउचित मनभायौ॥ २४४॥

टी०। हेहरि कल्याण के हेतु जो तुम्हारे स्वरूपको ज्ञानसोमैं भुलायौ यहहेतु तें कि हृदय कमलमे विद्यमान जो आप ताकों त्यागकरि बाहर व्याकुल ह्वै दौड़ो फिरतहौं अर्थात् सुखके वास्ते अनेक यत्न करतहौं जैसे कस्तूरी मृग अति मतिहीन अपने अंग मे रुचिर जो मद रूप कस्तूरी ताको मर्म नाम भेद नहीं पायौ पर्वत वृक्षलता पृथ्वीको अनेक बिलखोजत फिरत है कि यह परम सुगन्ध कहांते आयौ तद्वत् मैं जैसे सरोवर निर्मल जलकरि पूर्ण

ऊपरतें कछु सेवार तृणछायरह्यौ तेह हेतु जलनहीं मानिताको त्यागकरि अपने हृदयको जारतहौं ऐसेमैं शठयहि विधिनामजल त्यागकरि पिपासा बुझायौ चाहतहौं अर्थात् आपको भूलि सुखकी कामना करतहौं कठिन जो त्रिताप सो शरीर सो व्याप्त ह्वै रह्यौ है तापरदुःसह जो दरिद्र सो दुख देतहै तेहके दूरकरवे निमित्त अपने घरमो नाम रूपकल्पद्रुम विद्यमान सो त्यागिकरि विषयरूप बबूरके बागमो मन लगावत हौं यह मेरी बेवकूफी हम ऐसे मूढ़ आपसमान ज्ञानपाय दूसरोनहीं ऐसी बूझि है प्रभुउचित जोमन मोभावे सो तुलसीदास के ऊपरकरो यह बिनय है ॥ २४४ ॥

मू० । मोहिंमूढ़मनबहुत बिगोयौ । याकेलियेसुनहुंकरुणामय मैं
जगजन्मजन्मदुखरोयौ । शीतलमधुरपियूषसहजसुखनिकटहिं
रहतदूरिजनुखोयौ । बहुभांतिनश्रमकरतमोहबसवृथहिमंद
मति बारिबिलोयौ । कर्मकीच जियजानि सानिचित चाहत
कुटिलमलहि मलधोयौ । तृषावन्तसुरसरिबिहायशठ फिर
फिर बिकल अकाश निचोयौ । तुलसिदास प्रभुकृपा करहु
अवमैंनिजदोषकछूनहिंगोयौ । डासतहीगइबीतिनिशासब
कबहुंननाथनींदभरिसोयौ ॥ २४५ ॥

टी० । मोको या मूढ़ मनने बहुत बिगोयौ नाम अनेक बार संसाररूप कूपमो गाड्यौ है करुणामय सुनो यह मनकेलिये हम जगत् विषे जन्म ग्रहणकरि २ जन्म २ मो दुखतेरोये शीतलमधुर अमृत तुल्य जो सहज सुख नाम तुम्हारे स्वरूप को प्रकाश सो निकटहिं रहतेनाम हृदयमो विद्यमानरहते पर जैसे दूरिखोयौ तथा बहुत प्रकारते अज्ञानबस तेह सुखके प्राप्त निमित्त व्यर्थ मैं जो मतिमन्द सो अनेक यत्नकरि परिश्रम करत हैं। जैसे घीके वास्ते जलबिलोयौ नामसथ्यौ कर्म जोकीचरूप तेहकीचते सन्यौ जो चित्तताको कुटिल जो मैं सोमलहीते मल धोयौ चाहत हौं जियजान नाम कर्मरूप कांदो को शुद्ध जल रूप जियमो मानि करि अर्थात् कर्मवासना कीचरूपसो चित्तमिलि रह्यौहै सो जब तेह कीचते चित्तभिन्न होय तब शुद्धतापावै सो जब ज्ञानभक्ति रूपजलते धोयौजाय तब कर्मवासनारूप कीचछूटे चित्त शुद्धहोय सो मैं जल त्यागकरि कीचैको जलमानि कीचछुड़ावत हौं अर्थात् शुभकर्मतें अशुभको नाशकियो चाहतहौं इहां गूढ़ अभिप्राय है

कि यद्यपि शुभ कर्मते अशुभको नाश होतहै तामें संदेह नहीं
तथापि सकाम दोऊ शुभअशुभ कर्म गर्भबासकेहेतुहैं तेहतेदोऊ
को कीचरूप कह्यौ तथापि प्यास लग्यौ जो मोको सो गंगाजीको
त्यागकरि फेरफेर व्याकुल ह्वै आकाश को निचोयौ नाम जल के
वास्तेगारतहौं अर्थात् गंगारूप आपको स्वरूपछोड़ि आकाशरूप
विषै निचोड़ने तुल्य बरावर को भोग तेहतें सुख रूप जलचाहत
हौं अब निष्कपट होय अपनो दोषकछुछपायो नहीं यहविचार
तुलसीदासके ऊपर कृपाकरो डासतहीनाम बिछौना बिछावते
समस्त रात्रिव्यतीत भई हेनाथ कबहुं नींद भरि न सोयौं अर्थात्
सुखके अर्थ यत्न करते करते समस्त आयुर्बल रूपी रात्रिव्यतीत
ह्वै गई पर सुखको लेसऊ न मिल्यौ तुम्हारे अनुग्रह बिना यह
विनय है ॥ २४५ ॥

मू०। लोकवेदहूं बिदितसुनि समुझि मोह मोहितविकल मति
थितिनलहति। छोटेबड़ेखोटेखरेमोटेदूबरेरामरावरेनिबा
हेंसबहीकीनिबहति। होतीजौंआपनेबसरहतीएकहीरस
दूनीनहरषशोकआंसतिसहति। चहतोजोजोइ२लहतोसो
सोइ२केहूभांतिकाहूकीनलालसारहति। कर्मकालसुभाव
गुणदोषजीवजगमायाते सो सभै भौंहचकितचहति। ईश
दिनगीशनि योगीशनिमुनीशनिहूं छोड़तछोड़ाये तेंगहाये
तें गहति। सतरंजकोसोराजकाठकोसबसमाजमहाराज
बाजीरचीप्रथमनहति। तुलसीप्रभुकेहाथ हारिबोजीतिबा
नाथबहुवेषबहुमुखशारदाकहति ॥ २४६ ॥

टी०। लोकवेददोऊ मो बिदितबात सुनिसमुझि करिमोहतें
मोहित जोव्याकुलमतिसो थितिनाम थिरतानहीं पावतिअर्थात्
जीवको स्वतंत्र अरुपरतंत्र दोऊपक्ष शास्त्रमें मिलतहै तेहतें बुद्धि
थिरनहीं होतितासों अनुभवतें विचारतहौंकिछोटे बड़ेखरेखोटे
प्रबल अबलजितने जीवहैं हेरामरावरे निबाहें सबकी निबहतिहै
परमेश्वर आधीन जीवहैं यह जो सिद्धान्त तामेंहेतु कहतहैंजो
आपने बस होती तो एकही रस रहती दूनी जो दुनियां तामें
कोऊ हर्षत्यागकरि शोकतेंआंसति न सहत अर्थात् जौयहजीव
स्वतंत्रहोत तो जेहविषयादिकों यानेसुखरूपमान्यौ है अरु ताको
भोक्ताजोदेह इन्द्रियादिसों सर्वदा एकरस बने रहते याको नाश

न होतो तथा जोजो जीव जौनजौन चाहकरतो सोइ सोइ ताको प्राप्तहोत काहुप्रकारतें काहुंकी लालसा नरहति नाससबजीव पूर्णाभिलाष होते सोहैंनहीं जीवकेस्वतंत्रपक्षकों हेतुदैकरिखंडन कियेपरतंत्र पक्षको दृढ़करतहैं कर्मादि जगत पर्यन्त सो मायाते नाम यह सबकी करनेवाली अविद्या है सोसभय नाम डरिकरि चकित है आपकीभौंह चहतिनाम देखतिहै अर्थात्जैसो कटाक्ष तैसोकार्यकरैहै ईशनिनाम शिवब्रह्मादिगीशनि नाम इन्द्रादिअष्ट लोकपाल योगीशनि नाम मार्कण्डेय आदि मुनीशनि नामवशि-ष्ठादि यह सबकों सोअविद्या आपके छोड़ाये छोड़ति है आप के गहाये गहति है शतरञ्ज कैसो राज नाम बादशाह अरुकाठको सबसमाज नाम वजीर घोड़ाहाथी रथप्यादा हे महाराजआपने बाजीनाम खेलको रचौ तासो प्रथम नहतिनाम खेलवाड़ी बाजी कों बे खेलें पहिले नहीं नाशकरे है तद्वत् शरीर रूप बिसाति अर्थात् चौंसठघरवाला बिछौना इन्द्रीरूप वजीरप्यादादिसामग्री जीवरूप बादशाह यह शतरञ्जरूप बाजीआपनेरचीहै सोखेल दो करि होतहै तैसे आप अरु माया यह शतरञ्जकों खेलतहो बाद-शाह प्यादादिकों चलावतहो हेप्रभुहारि अरुजीत दोऊ आपके हाथहै अर्थात् शतरञ्ज के बादशाहको नाममात्रहै हारनेवालो जीतनेवालो खेलवाड़ीहै तद्वत्यहजीवादिसामग्री आपके प्रेरणा करि अपने व्यापार कों करत है सर्वदा परतंत्र है शतरञ्ज के खेलमो दो बादशाह होतहैं तामों एक हारैहै एकजीतैहै तद्वत् इहां बिमुख सन्मुख दो प्रकार के जीव तथा तैसे दो खिलवाड़ी सदृश यहां माया अरु ईश्वर सो जेहसन्मुख रूप जीव बादशाह वजीर प्यादादिसामग्री सहितकों परमेश्वर चलावतहैं सोसंसार रूप खेलकों जीततहै और जेह विमुख जीवरूप बादशाह वजीरं प्यादादि कों अविद्या चलावति है सो संसाररूप खेल हारत है इहां जन्ममरण छूटनो सोई जीत अरु बारबार जन्ममरण होनो सोई हारि सो आपके आधीन है यहो सिद्धान्त बहुत वेष अरु बहुत सुखकरि सरस्वती कहति है सोई तुलसीको निश्चय है पूर्वोक्त हेतुन्हकरि जीवकेस्वतंत्रपक्षको खण्डनकरिपरतंत्रपक्षको सिद्धान्त किये यह अर्थ है ॥ २४६ ॥

मू० । रामजपि जीहजानिप्रीतिसों प्रतीति मानिरामनाम जपै

जैहैजियाकीजरनि। रामनामसौंरहनिरामनामकाकहनि
कुटिलकलिमलसोकसंकटहरनि। रामनामकोप्रभावपूजि-
यतगणरावकियोनदुरावकहीआपनोकरनि। भवसागरको
सेतुकाशीहूसुगतिहेतुजपतशारदशंभुसहितघरनि। बाल-
मीकव्याधहैअगाधअपराधनिधिमरामराजपैंपूजैसनिअम-
रनि। रोक्यौविंध्यसोख्यौसिंधुघटजहूंनाम बलहास्योहिये
खास्योभयोभूसुरडरनि। नामकलिकामअपारशेष शुकबार
बारमतिअनुसारबुधवेदहूंबरनि। नामरतिकामधेनुतुलसी
कोकामतरुरामनामहैविमोहतिमिरतरनि॥ २४७॥

टी०। राम नाम विषे जो जीवको निष्ठा तेहकरि सब दुख की निवृत्ति अरु सबसुखकी प्राप्तियहकहतहैं रामनामके प्रभावकरि ईश्वरजो गणेशजू सोगणनके राजाह्वै प्रथमपूजनीय न ऐसोकपाये नहीं अपनी करनी आपकहे अर्थात् पद्मपुराणीय राम सहस्र नाम तामो लिख्यौ है की पूर्व अवस्थामो श्रीगणेशजू अपनेऐश्वर्य ते उन्मत्त होकरि ऋषिन्ह के आश्रम कों भंगकरि बहुत उपद्रव किये यह आचरण कों शिवजू देखि दुख मानि रघुबर को ध्यान किये जब स्वामी प्रकटभये तब गणेशजूको दोष सब कहि करि प्रार्थना किये कि मेरो पुत्र ऐसो निंदित होय सोन चहिये तब स्वामी प्रसन्नह्वै आज्ञाकरी किरामनामको जपु कछु कालकरैं तबयोग्यता होगी सोशिवजूके उपदेशकरि हजारों वर्ष गणेशजू रामनाम को जपरूप समाधि कियेतेहके प्रभावते प्रथम पूज-नीयभये अगिलोतुकस्पष्टहै एकतुकमो बालमीकको प्रमाण दिये दूसरेतुक करि अगस्त्यजूको प्रसंग कहत हैं कि रोक्यौ बिन्ध्यनाम विंध्याचल, इतनेबड़े जो सूर्यको रास्ताबन्द ह्वैगयो तब देवता सब काशीमो अगस्त्यजू रामनामको जपरूप भजनकरतरहे तहांजाय प्रार्थना करतभये तब जायकरि विंध्याचलको निवारणकिये तथा असुर सब अनेक प्रकारतें दुखदेवें जबदेवता सब संग्राम करबेकों सन्मुख होंय तब समुद्रमो प्रवेशकरें तब यह विचार ठहर्योकि समुद्रके सूखेबिना यहमारे नजांयगे सो यहशक्ति अगस्त्यजू की है दूसरेकी नहीं यह रीतिते दूसरीबार देवतन्ह की प्रार्थना करि समुद्रको सोख्यै। तेह हेतुकरि हृदयमो हारि समुद्रखारी भया ब्राह्मणके डरते यहदोउ इतिहास महाभारतमो विस्तार करि

लिख्योहै इहां ग्रंथबढ़वेके भयते नहींलिखे यह सामर्थ्य अगस्त्यजू विषे केवल रामनामके जप केबलतें व्यासादि महात्मा कहत हैं नामकी महिमा अपार वेदादि कहतहैं सोनाम विषै जो प्रीति सोई तुलसीको कामधेनु कल्पवृक्ष रूप तथा अज्ञानरूप अन्धकार के नाश करबेको सूर्य तुल्य यह निश्चय है ॥ २४७ ॥

मू०। पाहिपाहि राम पाहिरामभद्ररामचन्द्र सुयश श्रवणसुनि आयौंहौंशरण। दीनबंधुदीनतादरिद्र दाहदोष दुखदारुण दुसहदरदरपहरण। जवजगजगजाल व्याकुलकर्मकाल सब खलभूपभयेभूतलभरण। तबतनतनधरिभूमिभारदूरिकरि थापेमुनिसुरसाधुआश्रमवरण। वेदलोकसबसाखी काहूकी रतीनराखीरावणकीबंदिलागे अमरमरण। ओकदैविशोक कियेलोकपति लोकनाथ रामराजभयो धर्मचारिउचरण। सिलागुहगृद्धकपिभीलभालुरातिचरख्यालही कृपालु कीन्ह तारणतरण। पीलउद्धरणशील सिंधुढील देखियत तुलसीपै चाहतगलानिही गरण ॥ २४८ ॥

टी०। हे कल्याणरूप राम बार २ सम्बोधन आदरार्थ है अरु अनेकबार पाहिपद दिये सो संसारते अतिभयमानिकरि सुयश सुनि शरण आयौ सो अगिले तुकते सुयश जनावत हैं दर नाम त्रास दर्पनाम गर्व जैने २ कालमो जगत के जालते अरु कर्मकालकी प्रबलता करि व्याकुलह्वै राजा सब खल भये तिनहीं करि पृथ्वीभरी तब २ अवतार ग्रहण करि सबको दुख दूरकरि वर्णाश्रम को स्थापित किये लोकवेद साखी हैं कि रावणनें काहूको रतीनाम ऐश्वर्य न राखो अरु जाके बन्दिनाम बन्दी खानेमो देवता मरणलगे ताको नाशकरि यह अध्याहार है लोकपालनको ओकनाम घरदैकरि शोकरहित किये सो सब फेर अपने २ लोकके स्वामी भये रामराज्यमें चारौं चरण जो सत्य दया तप दान तेहतें धर्मयुक्त भये अहिल्यादि को हे कृपालु आप ख्यालही सो तारणतरणनाम संसारतेपार अरु औरन्हको पारकरनेवालेऐसे समर्थकियेपर हेपीलउद्धारण नामगजकेउद्धारकर्त्ता पीलशब्दपारसीमो हाथीको कहतहैं हे शीलसिन्धु तुलसीपै ढीलदेखिपरत है तेह हेतुतेगलानिते गल्यौचाहतहौं अब शीघ्र कृपाकरो २४८ ॥

मू०। भलीभांतिपहिचानेजानेसाहिबजहांलौंजगजूड़ेहोतथोरेहीं

थोरेहीगरम। प्रीतिनप्रवीननीतिहीनरीतिकेमलीनमाया धीनसबकियेकालहूंकरम। दानव दनुज बड़े महामूढ़ मूढ़ चढ़ेजे तेलोकनाथनाथबलनि भरम। रीझिरीझि दियेबर खीझिखीझिघालेघर आपनेनिवाजेकीनंकाहूकेशरम।सेवा सावधानतूसुजान समरथ सांचो सदगुणधाम रामपावन परम। सुरुखसुमुखएकरसएकरूप तोहिविदितविशेषिघट घटकेमरम। तोसोनतपालनकृपाल कङ्गाल मोसो दयासो बसतदेव सकलधरम। रामकामतरुछांहचाहेरुचिमन मांह तुलसीबिकलबलिकलिकुधरम २४९॥

टी०। हमऐसे जीवको ग्रहणकरै सो आपछोड़ि दूसरे कोऊ हैनहीं यहकाहतहैं जगतमे जितने साहिबनाम ऐश्वर्यवान तेह सबको भली प्रकार जाने अरु स्वभाव पहिचाने सो थोड़े सेवासो बड़ेनाम शील होतहैं तथा थोड़े अपराध सो गरम नाम क्रोध करतहैं प्रीतिमो प्रवीन कोऊनहीं अरु नीति करि हीन रीति जितनी सो मलीन तथा कर्मकाल मायाने सबको आधीनकियो है सो जब आपै ऐसे तो तिनते अपने भलेकी कैसे प्रतीति होय दानव दैत्यबड़े २ समर्थ भये पर महामूढ़ मूढ़चढ़े नाम ऐश्वर्य के पाये मर्यादि त्यागिकरि महात्मन्हके माथेचढ़त भये लोकपालन को अपने बलकरि जैकियें हे नाथ निभरम नाम मेरेऊपर और कोऊ ईश्वर है यह भरम जाको नहीं अर्थात् निश्चय प्रतीतितौ कबकरेंगे भ्रमकरिभी आपको ईश्वर न माने ऐसेमूर्ख अरुइन्द्रादि देवता सब थोड़ो सेवासो रीझि रीझि बरदान दिये तथा थोड़े अपराधमो खीझि खीझितेहतेहघरको नाशकिये अपनेनिवाजबे की काहूको शरण नहीं अर्थात् यह संकोचनहीं किजाको हम कृपाकरि अपनोकियेताको नाशकरनो उचित नहींयह हेतुनते सब खारयी जानि पड़े हे रामसेवा किये सावधान सुजान नाम हृदयको बूझनेवाले समरथनाम सबकरबे योग्य सांचो नाम सर्व काल एक रस सद्गुण धाम नाम क्षमा करुणादि जो महान गुण सो सेवन करत हैं जाको पावन परम नाम शिवादिपवित्र रूप हैं पर आप के पवित्र किये सब पावन होत हैं सुरुख नाम सर्व्वदा प्रसन्न सुमुख नाम कामदेवादि जो सुन्दर सोऊ लज्जित होतहैं जेह मुखको देखि यह सब गुण एकरस रहतहैं जेहसो

एकरूपनाम जेहिके रूपको नाश नहीं सब कालमें अपनेस्वरूपतें विद्यमान ऐसे जो आप ताकों विशेषतें घटघटके मरमनाम भेद विदितहैं नतजीवके पालक अरु कृपालु तुमसमान दूसरो नहीं तथा हम समान कङ्गाल नहीं देव दयामें सकल धर्म बसत हैं अर्थात् दीन जो मैं तापर जो कृपा किये तौ सर्व धर्म करिचुके कल्पवृक्षरूप जो आप हे रामजू ताकीछाया चाहतहौं अतिरुचितें बलिजांव कलिके कुधरमकरि मनमांह तुलसी व्याकुलहैरह्यो है शीघ अपनी छायाकी शरणदेव यह विनय है २४९ ॥

मू०। तौहौंबारबारप्रभुहिपुकारिकैखिझावतोनजोपैमोकोहोतो कहूंठाकुरठहरु। आलसीअभागेमोसे तैं कृपालपाले पोसे राजामेरेराजारामअवधसहरु। सेयेनदिगीशनदिनेशनगनेशगौरीहितकैनमानविधिहरिऊनहरु। रामनामहीसों योगक्षेमनेमप्रेमपनसुधासोंभरोसोयहदूसरो जहरु। समाचार साथकेअनाथनाथकासोंकहौंनाथहीकेहाथसबचोरऊपहरु। निजकाजसुरकाज आरतके काजराज बूझिये विलम्ब कहा कहुं नगहरु। रीतिसुनिरावरीप्रतीतिप्रीतिरावरेसौं डरत हौंदेखिकलिकालकोकहरु। कहेहीबनैगीकैकहाये बलि-जाउंरामतुलसीतूमेरीहारिहियेन हहरु २५० ॥

टी०। तौहमबारबार प्रभुको पुकारिकै खिझावते नहीं जौमोको दूसरो ठाकुर अरु ठहरुनाम जगह होतो काहे कि हमऐसे आलसी अभागेको तुमहीं पालेंपोसेहौ तातें राजा राम तो मेरे राजा अरु अयोध्या मेरे निवासको शहर दूसरो ठेकानोहै नहीं पूर्व कह्यौ जो अपनो अवलंग तेहके बलतें काहू देवादि कों सेवन नकियो केवल रामनामतें अपनो योगक्षेम नेमप्रेमपन मानत हौं याही भरोसेको तो अमृततुल्य और देवतांतर लोकांतरतें अपने कल्याणको जो विश्वास सो जहरसमान मानतहौं अपने साथ को समाचार है अनाथ नाथ मैं कासों कहौं काहेकि आपैके हाथ सो चोर चौकीदार सब हैं अर्थात् जोई मेरेसाथी काम क्रोधादि सोई लूटनेवाले तो चोर रूप कामादि अरु चौकीदाररूप जीवदोऊ आपके आधीन हैं जेहकोंगाफिलकरो सो गाफिल जेहको खबरदारकरो सो खबरदाररहात है परजो जीव आपैको पुकारै ताके अर्थ ढील न चाहिये काहे कि निजकाज नाम अपने भक्तन्ह को काज अरु आरतजीव तथा देवतन्हके कार्यकों

हे राजन् बूझोतो विलंब कहा कहूं नगाहरूनाम दैरनकियेयह आप को स्वभाव है पूर्व कही जो तुम्हारी रीति सो सुनि आप विषें मेरी प्रीति प्रतीति है सो यह मेरी अर्ज है कि कलिकालको कहरूनाम जुलुमदेखि अति डरतहौं सो इतनीबात कहेही बनैगी चेत संकोच होय किहम त्रैलोक्यनाथ ऐसे नीचजं वतें काहेको बोलें तो कहाये नाम महावीरादिजो निकटवासी ताकेसुखतें कहायदेव कि रे तुलसी तूमेरो हैसंसारतें हारिमानि हृदयतें नहहरूनामडरमति बलिजाउं हे रघुवरकछुदेना नहींपड़ै है बातमात्र कहनो है सोकृपाकरो॥२५०॥

मू० । रामरावरोसुभावगुणशील महिमा प्रभावजान्यौ हरहनुमान लषणभरत । जिन्हकेहियेसुथलरामप्रेमसुर तरुलसत सरससुख फलतफरत । आपमानेस्वामीकै सखासुभायपतितेंसनेह साव धानरहतडरत । साहिबसेवकरीति प्रीतिपरिमिति नीतिनेम कोनिबाहएकटे कनटरत । शुकसनकादिप्रह्लादनारदादि कहैं रामकीभक्तिबड़ीविरतनिरत । जानेबिनभक्ति न जानिबोतिहारे हाथसमुझिसयानेनाथपगनिपरत । छमतविमतनपुराणमतएक पथनेतिनेतिनेतिनितिनिगमकहत । औरनकीकहाचली एकै बात भलेभलो रामनामलियेतुलसी हू सेतरत ॥ २५० ॥

टी० हे रघुवीर तुम्हारो स्वभावादि शिवआदि महात्मा सबजानत हैं जिनके हृदयरूपी सुन्दरथालामें रामानुरागरूप कल्पवृक्ष शोभत रससहित जो सुखरूप फलताको फूलत फलत है अर्थात् भजनानन्द रूपफल फूलफूले है जोअनुराग रूपवृक्ष आपजो हि शिवजू कों स्वामी माने अरु महावीरको सखाभरत लक्ष्मण कों भाई परसो महात्मा सब यद्यपि आपतें पति नाम प्रतिष्ठा पाई तथापि आपके स्नेह सों सावधान ह्वै करि सर्वदा डरत रहतहैं खाबिन्द सेवककी रीति प्रीति परमित नाम प्रमाणअरु नीति तथा नेम यह सबके निबाह रूप जो एक टेकतेहतें कबहूं टरते नहीं शुकादि जो महानभक्तसो कहत हैं कि रघुवरकी भक्ति बड़ी विरतनिरत नाम समस्त ब्रह्माण्डतें जो वैराग्य तामें तत्परभये होतिहै ऐसोजानेबिनु भक्तिनाम नहीं होति सो जानिबो तुम्हारेहाथहै हे स्वामी अर्थात् सब महात्मन्हको संम्मत है कि समस्त संसारके विषयतें यावत् वैराग्य नहीं तावत् भक्तिनहीं होति ऐसो सिद्धान्त जानना यह भक्तिको मुख्य साधन है सो जब परम अनुग्रह जीवके ऊपर स्वामीकरतहैं तब ऐसो जानत है यही

समुझि करि मय ने जो सनकादि आदि महात्मा हे नाथ पगनि परत नाम सर्वदा तुम्हारे चरण कमल को प्रणाम करत हैं अर्थात् ज्ञानादि साधन पायेहूं भजन नहीं त्याग करते छमत विमत नाम छवो शास्त्रको एकमत नहीं तथा पुराणन्हकोमत एकमार्ग नहीं कहत अरु वेद नित्य प्रति नेतिनेति कहत हैं अर्थात् शिवादि ईश्वर अरु शुकादि भक्त जाके भजनको वस्तु मान्यौ है अरु वेदादि शास्त्र अनन्त कहत हैं तहां औरन्ह की कहा चलोनाम हम ऐसे जीवते ह परमेश्वर के स्वरूपकों कहा जानिसकें ते हितें एकै बातमिलै भली नाम भलीते भली है कि रामनाम लिये तुलसीहू से मन्दजीव संसारकौं पारहोत हैं यह सिद्धान्त किये ॥ २५० ॥

मू०। बापआपनेकरतमेरीघनी घटिगई। लालचीलबारकी सुधारिये बारकबलिरावरी भलाई सबही की भलीभई। रोगबस तनकु मनोरथमलीनमनपर अपबाद मिथ्याबानीहई। साधनकीऐसी विधिसाधनबिनान सिधि बिगरी बनावै कृपा निधि कृपानई। पतितपावनहितआरतअनाथनिको निराधारकोअधारदीन बन्धुदई। इन्हमेंएकोनभयौबूझिनजूझैनजायौताहीतेंचितप तयौलुनियतबई। स्वांगसुधैसाधुकाकुचालकलितेंअधिकपर- लोकफीकीमतिलोकरंगरई। बड़ कुसमाजराजआजलौं कौ पायेदिनमहाराजकेहू भांतिनाम ओटलई। रामनाम को प्रतापजानियतनीकेआपमोकोगतिदूसरीन विधिनिरमई। खीझिबेलायककरतबकोटिकोटिकटुरीझिबेलायक तुलसी कीनिलजई २५१ ॥

टी०। हे पिता अपनी कर्तव्यतातें मेरीबहुत घटिगईतथापि लालची लबार जो मैं ताकी एकबार बनाइये बलिजाव हे रघु बर चेत कहो कि तू भली करनो करत नहीं तो मैं कैसे बनाऊं सो नहीं काहे कि आपकी भलाईतें सबहीकी भलीभई है अर्थात् तुम्हारे अनुग्रह बिना जीव क्या भलाई करिसकै है अपनीकर्तव्यता नहीं करबेमा हेतु कहत हैं कि रोगकेबश तौ शरीर अरु कुत्सित मनोरथकरि मन मलीन पर अपबाद अरु मिथ्या बादकरि बानी नष्टभई अरु जितने योगादि साधन ताकी ऐसी विधि है कि पूर्ण साधनकिये बिना सिद्धि नहीं होति तेहितें विपर्यय हे कृपानिधि आपकी जो नईकृपा सो कैसियौ जीवकी बिगरी होय ताकौं पल

साचमो बनावे है ऐसी आपकी महिमा पतितपावनादि आपको बाना है दई नाम हे ईश्वर इन्हमें एकौ न भयौ नाम हृदय तें सांच है पतित आरत अनाथ निराधार अघसदीन कोऊ न भयो साथ बूझि नाम तुम्हारो स्वरूप बूझि करि न जूझे नाम जन्म मरण रूप संग्राममो जूझिकरि कृतार्थ न भये अर्थात् जन्म मरण छूट्यो नहीं तथा नअयौं नाम संसार रूपमगचक्रको अपने साधनके बलकरि जीति नसके तेहि तें त्रिताप करि तपौं नाम जलत हैं। काहे कि लुनियतसई नाम जो बोवे है सोई काटे है अर्थात् बीज को बोये अरु काटे धान सों नहीं होत स्वांगमात्र तो सूधे साधु को अरु कुचाल कलिकालहूतें अधिक तथा परलोककी बातीफीकीलगति है लोकरंग जो विषय रंग तामो बुद्धि रंगिरही है पर बड़े कुस-माज नाम कलिकाल ऐसो काल कामादि शत्रु प्रबल इन्द्री सब अपने कहेमो नहीं हेराइ ऐसी दशामो आजलों जो दिन पाये नाम मारे न गये तौ हे महाराज काहूप्रकार आपके नाम की ओट लई अर्थात् मनुष्य के शरीर रहत आपके नामके शरण भये हे रघुवर अपने नामके प्रतापको आप भलीप्रकार जानतहौ अस लोको नाम त्यागकरि दूसरीगति ब्रह्माने निर्मई नाम लिखी नहीं कोटिकोटि काटुनाम निषेध कर्तव्यता आपके खीजबे लायकहै पर आपके रीझबेयोग्य तुलसीकी एक निर्लज्जता है काहे कि अपनी अधमाई जानिकरि आपतें बारबार कहतहैं। याहीनिर्लज्जता के ऊपर रीझि कृपाकरो यहप्रार्थना है ॥ २५२ ॥

मू० । रामराखियेसरनराखिआयेसबदिन । बिदिततिलोकतिहुं
कालनदयालुदूजोआरतप्रनतपालकोहैप्रभुबिन । लालेपाले
नपोषे तोषे आलसीअभागी अघीनाथपै अनाथनिसोंभयेन
उरिन । स्वामीसमरथऐसोहोंतिहारोजैसोतैसोकालचाल
हेरिहोतिहियेघनीघिन । रीझिखीझिबिहंसिअनखक्यौंहूं
एकबारतुलसीतूमेरोबलिकहियतकिन । जाहिसूलनिर्मूल
होहिंसुखअनुकूलमहाराजरामरावरोसौंतेहिछिन॥२५३॥

टी० । हे स्वामी सबदिन जीवन्ह को शरण में रखिआये तैसे मोहूंको राखो तुमसमान दूसरो हैन हीं लालेनाम दुलारे पालन किये पोषेनाम पुष्टकिये तोषेनाम संतुष्टकिये आलसी अभागे पाप रूप जीवन्ह को हे नाथ अनाथन्हतें तुम कबहूं उरिन नभये आप

समर्थ हम जैसेतैसे तुम्हारेहैं दूसरेके नहीं सो कलिकालको चाल देखि हृदयमो घनीघिननाम अत्यन्त घृणा होतिहै अर्थात् कलिकालकी कर्तव्यता देखें चितकांपमान होतहै कि कैसे याको भोग करूंगो यह भाव है काहूप्रकार एकबार इतनी आप कहते क्यों नहीं कि रे तुलसी तू मेरो है बलिजाउं हेमहाराज इतने साच करि ताहीक्षणमो सबक्लेश मिटिजांयगे अरु सबसुखसानुकूलहोंयगे हेराम रावरीसोंनाम जौनेक्षणमो तुमसों सम्बन्ध होयगा॥२५३॥

मू०। रामरावरोनाममेरोमातुपितुहै। सुजनसनेहीगुरुसाहिब सखासुहृदरामनामप्रेमअविचलवितुहै।सतकोटिचरितअपार दधिनिधिमथिलियोकाढ़िवामदेवनाम घृतुहै नामकोभरोसो बलचारिहूंफलकोफलसुमिरियेछांड़िछलभलोकृतुहै।स्वारथ साधकपरमारथदायकनामरामनामसारिखोनऔरहितुहै। तुलसीसुभावकहीसांचिवेपरैगीसहो सीतानाथनामचितहूं कोचितुहै॥२५४॥

टी०। हेरघुवर तुम्हारो नामै मेरो सब है अरु तुम्हारे नामविषे जोप्रेम सोई अविचल वितु नाम अविनाशी धनहै सौकोटि चरित रूप समुद्रतें याही को शिवजू ने घृतरूप सार निकाल्यो है तथा नाम विषे जो विश्वास सोई चारोंफलको फलहै कामना रूप छल त्यागकरि स्मरण करनो यही भलो कृतु नाम कर्तव्यता है नाम समान हितकारी लोक परलोक दोऊ मो दूसरो नहीं सुन्दर भावतें तुलसी सांचिये कही है सीतानाथ के निकट अवश्यसही पड़ैगो यह प्रतीतिहै रामनाम चितहू को चितुहै नाम चैतन्यको चैतन्यकरै है अर्थात् जीवमात्र सब चैतन्य हैं पर जो नामके स्मरण होतहै सोई चैतन्य कहावत है॥२५४॥

मू०। रामरावरोनामसाधुसुरतरुहै। सुमिरेत्रिविधि घामहरत पूरतकामसकलसुकृतसरसिजसरुहै।लाभहूकोलाभसुखहूको सुखसरबसुपतितपावनडरहूकोडरहै। नीचेहूकोऊंचेहूको रंकहूकोरायहूकोसुलभसुखदआपनोसोघरहै। वेदहूंपुराणहूं पुरारिहूंपुकारिकह्योनामप्रेमचारिफलहूकोफरहै।ऐसेराम नामसौंनप्रीतिनप्रतीतिमनमेरेजानकानिसोसोईनर खरहै। नामसों न मातुपितुमीतहितबन्धुगुरुसाहिबसुधीसुशीलसुधा

कारहै। नामसोनिबाहनेहदीनको दयालदेर दासतुलसीको बलिबड़ोवरहै ॥ २५५ ॥

टी०। हे राम तुम्हारोनाम साधुन्हको कल्पवृक्षहै तहां संदेह होतहै कि कल्पवृक्ष साधु असाधु दोऊको समफलदेतहै तो केवल साधुओंको कल्पवृक्षरूप क्यौं कहै तामो यहहेतुहै कि कल्पवृक्ष को पहिचान जो जीवछाया ग्रहणकरतहै ताको फलहोत है अन्यको नहीं तैसेनामरूप कल्पवृक्ष को साधुही पहिचानत है अरुछाया को ग्रहणहोत है असाधु को दोऊ नहीं अब कल्पवृक्षते अधिकता देखावत हैं कि कल्पवृक्ष के निकट जबजाय तब दुखछूटे यह नाम रूप कल्पवृक्ष तो सुमिरणमात्रते त्रितापरूप घाम को दूरकरत है अरु कल्पवृक्ष यांचेते फलदेतहै यह तो कामना को पूरणकरत है अर्थात् जाके दिये फेर कामना नहीं होत तथा सकल जो पुण्य सो सरसिज नाम कमलताको सरनाम सरोवरहै अर्थात् सरोवर व्यतिरेक कमल की उत्पत्ति नहींहोती तद्वत् सब पुण्यकी उत्पत्ति स्थाननामहै लाभहुको लाभतासें सब साधनको फलरूप सुखहुको सुख नाम जीवन्मुक्त]जो सुखरूप ताहु को सुख देत है अरु सर्व जो पतित ताको सुपावननाम सुखपूर्वक पवित्रकर्त्ता अर्थात् औरसाधन ज्ञानादि क्लेशते पवित्रकरतहैं नाम स्मरणमो कछू क्लेश नहीं डरहु को डरहै नाम कालमृत्यु जोडररूप सोऊ नामावलम्बीते डरत है अरु नीच ऊंच दरिद्रीराजा सबजीवमात्रको सुलभ तथा सुखदाई अपनो घर समानहै अर्थात् अपने घरमो जाते कोऊ लोगमनहीं अरु गयेसुख होतहै तद्वत् जाके प्रभावको वेदादि सब कहतहैं तेहराम नाम सों जाको प्रीति प्रतीति नहीं सो मेरे जाने तथा औरऊ जानिबो नाम जानेको सो मनुष्यखरहैनाम गर्दभतुल्यहै नाम समान पितादि कोऊ हितकारी नहीं सुभी नाम मंगलरूप अरु सुन्दर शील जाको तथा सुधाकर नाम चन्द्रमा समान अमृत को दाता अर्थात् जेहि नाम के स्मरणमो सब मंगलहोत हैं तेहितेसुभीकहे अरु शरण होतेको अभय नहीं तातेसुशील कहे जन्म मरण छुड़ावत है तेहितेसुधाकर कहे ऐसो जो नाम तासों स्नेहको निबाह हेदयाल यह दीनको देऊ बलि जांव तुलसीदास कोही बड़ो वरदान है ॥ २५५ ॥

मू०। कहैं बिलुरह्यौनपरतकहैंरामरसनरहत । तुमहेसुसाहिब की ओटजन खोटो खरोकालकी कर्मकीकुमांमतिसहत । कारत

बिचारत बार पैयत न कहुं कछू सकल बड़ाई सब कहां ते लहत । नाथ की महिमा सुनि समुझि आपनी ओर हेरि कै हारि कै हहरि हृदय दहत । सखा न सुसेवक न सुतिय प्रभु आप माय बाप तुहीं सांचो तुलसी कहत । मेरी तौ थोरी है सुधरैगी बिगरियौ बलि राम रावरी सों रही रावरी चहत ॥२५६॥

टी० । हे राम कहे बिनु रह्यो जात नहीं अरु कहे रस नहीं रहत तुम ऐसे सुसाहिब की ओट लै करि यह जन खोटो अथवा खरो तथापि काल कर्म्मकृत कुत्सित पीड़ा सहत है यह न चहिये बिचार करते कहुं कछु सार नहीं पावत हैं। काहे कि सकल बड़ाई सब जीव कहां ते लहत नाम पावत हैं अर्थात् सब बड़ाई के आधार आपही आप की कटाक्ष ते सब की बड़ाई है सो महिमा नाथ की सुनि समुझि अरु आपनी ओर देखि हारि कै हहरि नाम डरिहि हृदय जलत है अर्थात् शरण होने की योग्यता आपनी नहीं देखत सखा आदि हितकारी कोऊ नहीं आपै माता पिता रूप हो सत्य करि तुलसी कहत है हे रघुबर मेरी तो थोड़ी बात है बिगरियो बनिजायगी बलि जांव हे राम रावरी सो रहि नाम तुम्हारे शरण सो रहि रावरी चहत नाम तुम्हारो यश चाहत है अर्थात् जगत् ऐसो न कहे कि रामजू के शरण की महिमा मात्र मिथ्या कहत है यद्यपि बारंबार कहनो उचित नहीं तथापि आपके यश रखवे के लिये पुकारत हौं ॥ २५६ ॥

मू० । दीनबंधु दूरि कियेदीन को न दूसरो शरण । आपको भलो है सब आपने को कोऊ कहूं सबको भलो है राम रावरो चरण । पांहन पशु पतंग कोल भील निशिचर कांच ते कृपानिधान किये सुबरण । दण्डक पुहुमि पाय परसि पुनीत भई उकठे बिटप लागे फूलन फरण । पतितपावन नाम बांम कहूं दाहिनो देव दुनीन दुसह दुख दूषण दरण । सील सिन्धु तोसों ऊंचो नीचि यौं कहत सों भातु ही तुलसी की आरति हरण ॥ २५७ ॥

टी० । हे दीनबन्धु आप दूरउ करे परयह दीन को दूसरो शरण है नहीं आपको तो सब भलो है अर्थात् जाको चाहो ताको भलो करि देव अरु आपने को कोऊ कहूं नाम भाग्यवान जीव को काहू स्थान मो कोऊ भले। करने वालो मिलि जात है पर सब को भलो तो हे रघुबर तुम्हारो चरण है यदा अपने भले को सब चाहत हैं पर अपने को नाम रूपने जो आयित जीव ताको भलो करे ऐसे कोऊ कोऊ कहूं

होतहैं औ आपको चरणतो सबकोनाम ऊंचनीचजीव माचकों भलो करतहै पूर्वोक्तको दृढ़ करतहैं अहल्यादि जो नीच जीवशी कांचरूप ताकों हे कृपानिधान आप सुवरण किये पतंग नाम पक्षीतथा दण्ड-कारण्य पापरूप सो जेह चरण के स्पर्शतें पुण्यरूप भयो यही हेतुन्ह तें काहे कि सबकोभलो आपको चरणहै बिमुख सन्मुखपतित सबकों पावन कर्ता नाम है हेदेव दुनी नाम संसार सो दुःसह दुख दोष दलन नाम नाशकरै सो दूसरो नहींहै हेशीलसिन्धु आपसों नीचो ऊंचो कहते तुलसीको शोभाहै काहे कि जीवके क्लेशहरण करवेको तुम ऐसे तुमहीं हौ तब दूसरो केहतें कहौं ॥ २५७॥

मू०। जानिपहिचानिमैं बिसारेहौं कृपानिधानएतोमान ढीठहैं।
उलटिदेतखोरिहैं। करतयतनजासोंजोरिबेकोयोगीजनतासों
क्योंहूंजुरीसोअभागोबैठितोरिहैं। सोसदोसकोसकोभुअन
कोसदूसरो न अपनीसमुझिसूझिआयोंटकटोरिहैं। गाड़ीके
स्वानकीनाईंमायामोहकीबड़ाईछिनहिं तजतछिनभजतबहोरि
हैं। बड़ोमाईद्रोहीन बराबरीमेरीको कोऊनथकीसपथकिये
कहतकरोरिहैं। दूरिकीजैद्वारतेंलवारलालचीप्रपंचीसुधासों
सलिलसूकरीज्योंगहडोरिहैं। राखियेनीकेसुधारिनीचकों
डारियेमारिदुहूंओरकोविचारिअबननिहोरिहैं। तुलसीकही
हैसांची रेख बारबार खांचे ढील कियेनाम महिमाकी नाव
बोरिहैं॥ २५८॥

टी०। पूर्व स्वामीकी कृपालुताको देखि प्रार्थना किये अब अपनी ओर देखि बोलत हैं हे कृपानिधान जानि पहिचानि करि तुमकों भूलतहौं ताहूपर ऐतेअभिमानतें ढीठहैं कि उलटो तुमहींको खोरी नाम दोष देत हों जासों संबन्ध जोरिवेकों नाम करिवे कों योगी जन अनेक यतन करतहैं तासों क्योंहूं जुरीनाम संबन्धभयो अर्थात् जगत् रामदास कहन लग्यौ सोमैं ऐसो अभागी की वा संबन्ध कों तोरिबैठतहौं नामबिमुख होतहौं सोसों दोषकोभंडार समस्तभुवन कोशसो अपने समुझ चत सूझि नाम देखनि सो टौरि आयौं नाम ढूंढ़ि आयों दूसरोनहीं गाड़ीकेस्वानकी नाईं अर्थात् जेहि शूकरको स्वामी गाड़ीपर चढ़ि कहूं बिदेशचल्यौ सोकूकर संग जातहै जहां कहीं रास्ता सो दूसरी गाड़ी देखि पड़ी भ्रमकरि वाहीके संग दूर तक जात फेरि पहिचानिकरि फिरतहै योंहीं भटकत भरि रास्ता

दुखी होत है तद्वत् माया अरु मोह के बड़ाई ते जिनही को त्याग करत हैं फिर उनहीं को सेवत हैं अर्थात् अज्ञान ते तेह स्वानकी नाईं विषयको सुखरूप मानि आपते बिमुख होत हैं फेर विषयको जब दुखरूप देखत हैं तब आपके सन्मुख होत हैं जैसे वा स्वानको समस्त राह वाही रीतिकरि बीतत है तद्वत् मेरी समस्त आयुर्बल याही रीतिते भटकत समाप्त होति है स्वामी ते बिमुख रूप द्रोह करबेमें हमते बड़ो अथवा मेरी बराबरी को कोऊ नहीं हेनाथ यह करोरि शपथकरि कहत हैं ऐसी बूझि लबार लालची प्रपञ्ची जो मैं ताको अपने दरवाजेते दूर करो नाम धक्का दे निकलवाय दो अर्थात् ऐसी प्रेरणा करो जामें फेर सन्मुख न होय काहेकि जो रहेगो तौ अमृत समान निर्मलजल ताको सूकरि जैसे पैठि गहडोरि नाम गंदैलो करि देइ तैसे सूकरि समान मलीन जो मैं सो शुद्ध जलसमान जो आपको यश ताको मैलो करूंगो अर्थात् सन्मुख रहूंगो तो बार २ कहि सबको जनाऊंगो कि रघुबरकी पतित पावनादि बिरदावली कथन मात्र को है अपनी ड्यौढ़ीते जुदा करिये एक पक्ष यह कह्यौ अब दूसरो पक्ष कहत हैं कि चेत रखिये तो नीके सुधारि नाम प्रेरणा करि अन्तःकरण शुद्ध भक्तन्ह की नाईं समुझ अरु आचरण बनायकरि रखिये अब तीसरा पक्ष कहत हैं कि अथवा यह नीचको मारि डारिये नाम जैसे राजा सब चोरादि दोषी जीवको फांसी दिलवाय देत हैं तद्वत् हेरघुबर दुहूं ओरकी बिचारि नाम अपनी औ तुम्हारी दोऊ कहिबेको अब यह फेर नहीं निहोरा करैगो बार २ रेखा खांचि तुलसीने सांची कही है अब ढील किये आपके नामके महिमा की जोनाव ताको अवश्य डुबाऊंगो उचित होय सो करो॥ २५८॥

मू०। रावरीसुधारीजो बिगारीबिगरैगीमेरीकहो बलिबेदकिनलोक कहाकहैगो। प्रभुकोउदासभावजनकोपापप्रभावदुहूंभांतिदीन बन्धुदीनदुखदहैगो। मैंतो दियौछातीपविलयौकलिकालदवि त्रासतिसहसपरबसकोउन सहैगो। बांकौबिरदावलीबनैगी पालेहींकृपालअन्तमेरोहालहेरियौंनमनरहैगो। करमीधरमी साधुसेवकबिरतरतआपनीभलाईथलकहांकोनलहैगो। तेरे मुंहफेरेमोसेकायरकपूतक्रूरलटेलटपटनिको कौनपरिगहैगो। कालपायफिरत दशादयालसबहीकी तोहिबिनमोहिंकबहूं न

कोउनचहैगो। बचनकरमहीयेकहौंरामसौंहकियेतुलसीपै नाथकेनिबाहेनिबहैगो॥ २५९॥

टी०। चेतकहो कि मैंतो तेराभलो कियो चाहतहौं पर अपनी तू आपै बिगाड़ै है तो हे स्वामी आपकी सुधारी जो मेरे बिगारे बिगड़ी तो बलिजांव आपै कहो कि बेदकिन नाम बेद कहा अरु लोकनाम जगत् कहा कहैगो अर्थात् आप बनावने चाहैं अरु मैंने बिगाड़िदई तौ हमहीं को ईश्वर लोक बेद मानैगो यह भावहै हे प्रभु आपको हमते उदासभाव होनो अरु जनको पापको जो प्रभाव या दोऊ भांतिते दीनबन्धु यह दीन दुखते जलेगो मैं तो अपनी छातीपर बज्रदियौ काहेकि कलिकालने दबायलियौ तो हजारन्ह लोग परबस भये कौन सहैगो अर्थात् यहलोकमो प्रसिद्धहै कि जब कोऊ दुसहशोक जाको होतहै ताको हितवर्ग यही उपदेश करैहैं कि जो होनेवाली सो ह्वैगई अब छातीको बज्र करौ तद्वत् मैं बूझ्यौं कि कलिकाल के आधीन भये जो २ दुख वह भोग करावै सो सहे बनत है यही बिचार बज्रतुल्य छाती पर धस्यौ पर आपकी बांकी बिरदावली है नेहकर आदर देखे है कृपालु पालन कियेही बनेगो यद्यपि अबहीं दया नहीं आवति है परियत नाम नरकादि भोग के समय मेरो हाल देखि ऐसो कठोर मननहीं रहैगो यह बिश्वास है हे स्वामी शुभकर्म के कर्ता अरु धर्मात्मा तथा साधु तुम्हारे सेवक निरतरत नाम बैराग्यमान् जीव अपनी भलाई करि थलकहां नाम बैकुंठादि कारनस्थलको न पावेंगे अर्थात् अपने कर्व्यतातें ऐसेको सब कामना सुलभहै पर हम ऐसे कायरनाम संसारतें नडरे कपूतनाम कोऊ भलो करनी नहीं जाको क्रूरनाम कठोर चित्त खटैनाम पौरुष हीन खटपटैनाम बिषयलो सन्यो चित्तजाको ऐसेसो आपने मुख फेर लिये दूसरोकौन ग्रहणकरैगो अर्थात् हम ऐसेजीवन्हको तो तुमहीं गति हौ हे दयाल कालपाय सबकी दया फिरतिहै नाम दुख सुख दोऊ भोग होतहै पर मोको तो तुम्हारे बिना काहू कालमो कोऊ न चहैगो अर्थात् तुम्हारे अनुग्रह बिना मैं एक रस केवल दुखको भोगीहौं यह बूझि मन बचन कर्मते शपथ करि कहत हौं कि हे राम तुलसी तौ आपके निबाहे निबहैगो त्याग किये डूबैगो यह निश्चय है॥ २५९॥

मू०। साहिब उदासभयदासखास खीसहोतमेरीकहाचीलहौंबजाइ

जाइ रह्यौ हैं। लोकमें न ठाउं परलोकको भरोसो कौन हैं तो बलि जाउं राम नाम हीं ते लह्यौ हैं। कर्म सुभाव काल काम कोह लोभ मोह ग्रह अति गहनि गरीब गाढ़े गह्यौ हैं। छोरिबे कौं महाराज बांधिबे को कोटि भट पाहि प्रभु पाहि तिहूं पाप ताप दह्यौ हैं। रीझि बूझि सबकी प्रतीति प्रीति यही द्वार दूध को जस्यो पियत फूंकि फूंकि मह्यो हैं। रटत रटत लटयों जाति पांति भांति घटयों जूठनि को लालची चहौं न दूध नह्यो हैं। अनत चह्यौ न भलो सुपथ सुचाल चल्यौ नीके जिय जानि इहां भल्यौ अनचह्यो हैं। तुलसी समुझि समुझायो मन बार बार अपने सो नाथ हूं सों कहि निरबह्यो हैं ॥ २६० ॥

टी०। हे महाराज खाविन्द के उदास भये खास दास जो मुसाहिब सोऊ खोस नाम लज्जित ह्वै तुच्छ होत है मेरी कहा चली नाम कौन गिनती मो हौं नाम हम तो बजाय नाम डंका दै कारि जाय रह्यो हैं नाम नाश ह्वै चुक्यौ रह्यौं काहे कि लोक मो कहूं जह नहीं तब परलोकको भरोसा कौन पर बलिजांव हे रघुबर तुम्हारे नामही के आश्रय तें लह्यौ हैं नाम देखि पड़त हैं अर्थात् अबतक बचो हौं कर्मादि जो क्रूर ग्रह पर्यन्त सो अति गहनि नाम अत्यन्त जबर ह्वै यह गरीब को गाढ़े पकड़ा है सो हे महाराज छोरिबे कौ एक आपहो अरु बांधिबे को कोटिन्ह बीर तेह करि त्रय तापतें जल्यौ हैं सो हे प्रभु याही रीझि बूझि सबकी नाम आपतें अन्य सब देवतन्ह की भलीप्रकार जानि तब प्रीति प्रतीति यहि द्वार नाम आप के दरवाजे पर भई है काहे कि लोक प्रसिद्ध है कि दूध को जल्यौ फूंकि फूंकि माठा पियत मैं अन्य साधन अरु देवतान तरतें निराश ह्वै आपके शरण भयो हौं तबहूं रटत २ लट्यों नाम शक्ति हीन भयौं अरु जाति पांतिकी भांति घट्यो नाम काहूके कामको न रह्यौं सो केवल जूठनि को लालची हौं दूध अरु नह्यौ नाम मलाई नहीं चाहत हौं अर्थात् जाको बड़ी कामना होय ताके देबेमो विचार है औ मैं तो जूठी पत्तल चाहत हौं तब इतनी देर क्यो अनत नाम तुम्हारे दरबारतें अन्य चह्यौ न भलो नाम और स्वामी इन्द्रादि ज्यों चाह करि भी राखें तथा सुमार्ग मो सुचाल नाम वेदविहित सब कर्म करि चलनो भलो न मानत हौं अरु इहांको अनचह्यौ नाम आप नभी पूछत हो निरादर ह्वै ड्योढ़ी पर पड़े हौं सो नीकी प्रकार जियमो जानि भलो मानत हौं तुलसी समुझि अपने मनको बार २ समुझायो कि यह ड्योढ़ी छोड़ि अन्यत्र

नहीं गाने सो अपनो सों नाम अपने हृदय की स्वामी सों कहि निवह्यो हौं नाम कहि चुक्यौं जैसी रुचि होय सो करो ॥ २६० ॥

मू० । मेरोनबनेबनायेमेरेकोटिकल्पलौंरामरावरेबनायेबने पलपा-
उमैं । निपटसयानेहौ कृपानिधानकहाकहौं लियेबेरबदलि
अमोलमणिआउमैं । मानसमलीनकरतबकलिमलपीनजी
हहूंनजप्यौनामबक्यौआउबाउमैं । कुपथकुचालचल्यौभयोंन
भूलिहूंभलोबालदसाहूंन खेल्यौखेलतसुदाउमैं । देखीदेखा
दंभतेकिसङ्गतेभईभलाई प्रगटिजनाईकियोदुरितदुराउमैं ।
रागरोषद्वेषपोषेगोगण समेतमनइनकी भक्तिकीनीइनहीं
माभाउमैं । आगिलोपाछिलोअबहूंकोअनुमानहौं ते बूझि
यतगतिकछुकीन्हो तोनकाउमैं । जगकहैरामकोप्रतीति
प्रीतितुलसीहूंझूठेसांचेआश्रयसाहिबरघुराउमैं ॥ २६१ ॥

टी० । चेत आपकहो कि बेपौरुष ह्वै क्यौं गिरतहो कछु पौरुष करो सो हे स्वामी मेरे बनाये कोटिकल्प लौं मेरी न बनैगी अरु हे रघुवर तुम्हारे बनाये पलपाउ नाम पलके चतुर्थभागमें बनैगी हे कृपानिधान कहा कहौं आप निपटचतुर हो अरु मैं लिये बेर कहे अमोलमणि बदले सो बेरलेबे को आउ मैं नाम आयो हौं अर्थात् बेर समान मैं अमोलमणि तुल्य आपकी शरण यह बदलबे को डेवढ़ी पर आये सो आप जो भले स्वामी हो तो शीघ्र मेरो कार्य सिद्धि होत सो त्रैलोक्या की चतुराई आपविषे मेरी कछु चले है नहीं अन्तष्करण तो मलीन कर्तव्यता कलिके मलते पुष्ट जिह्वा ते नाम जप्यौ नहीं आउबाउ नाम व्यर्थ वचन कहिकाल व्यतीतकिये कुमार्ग मो कुचाल नाम वेदबाह्य क्रियाचल्यो नाम कियौ भूलिहूंकरि भली कर्तव्यता न भई अरु बाल्यदशाहूं खेलते सुदाव न खेल्यौ नाम भगवत् संबन्धी खेलऊ न खेल्यौ देखी देखा अथवा दंभते अरु काहूके सङ्गते जे कछु भलाई भई सो प्रगटकरि लोकने जनाई अरु कियौ जो पाप ताको दुराउ नाम अनेक यत्न करि छपायौं तथा राग जो विषय में प्रीति अरु क्रोध नानादोष तेहिते इन्द्रीसमेतमनको पोषे नाम पुष्टकिये तथा इनहींकोनाम इन्द्रियादिकी भक्ति अरु भाउ नाम प्रीतिकरी आगिलो जो आवने वाले जन्म पाछिलो जो व्यतीतभयो अबहूं को नाम वर्तमान सो अनुमानकरि अपनी गति बूझत हैं तो काउ नाम कार्यभलो कछु

नकियौ पर जगत रामको दास कहे है अरु तुलसीहूं को यही प्रीतिप्रतीति होति है झूठे अथवा सांचे खाविन्द जो श्रीरामजू आप ताको आश्रय है ॥ २६१ ॥

मू०। कह्यौनपरतबिनकह्यौनरह्यौनपरतबड़ोसुखकहतबड़ेसोबलि दीनता। प्रभुकीबड़ाईबड़ीआपनीछोटाईछोटीप्रभुकीपुनीतताआपनीपापपीनता।। दुहूंओरसमुझिसकुचिसहमतमन सन्मुखहोतसुनिस्वामीसमीचीनता। नाथगुणगाथगायेहाथजोरि माथनायेनीचऊनिवाजे प्रीतिरीति की प्रवीणता। यहिदरबारहैगर्बतेसर्बहानिलाभ योगक्षेमकी गरीबीमिसकीनता। मोटोदसकन्धसोनदूबरोबिभीषणसोबूझिपरीरावरे की प्रेमपराधीनता। यहांकीसयानपअयानपसहससमसूधोसतिभायकहेमिटतिमलीनता। गीधशिलाशबरीकीसुधिसब दीनकियेहोयगी नबाई सो सनेहहित हीनता। सकल कामना देतनामतेरोकामतरु सुमिरत होत कलिमलछल छीनता। करुणानिधानबरदानतुलसी चहत सीतापति भक्तिसुरसरितीरमीनता ॥ २६२ ॥

टी०। हेस्वामी कह्यौजातनहीं अरु कहेबिना रह्यौपरतनहीं पर यह बूझत हैं कि सबतेबड़े जो आप तासों आपनी दीनता बलिजाउं कहतेभो बड़ोसुख है अर्थात् आप नहीं भी सुनी तौहूं आपते कहिबेमात्र करि चित्त शान्त होतहै दूसरे तुमते अपनी मन्दता अरु स्वामीको अद्वितीय ऐश्वर्य कह्यौ पूर्वकह्यौ जोबिप्रीति धर्मको दुहूंओर को समुझि सकुचिकरि मन सहमतनाम शरणहोवेको उत्कंठा नहीकरत फेरसज्जनन्हके मुखते स्वामीकी समीचीनता नाम गरीबनेवाजी सो प्रवीणता सुनि तब सन्मुख होत है तेहि समीचीनता को देखावत हैंकि हे नाथ आप को गुणगाथ गावे हाथजोरि माथे नाये नीचऊ जीवन्ह को निवाजे यह प्रीतिरीति की प्रबीणताहै यह दरबार मे गर्बकिये सर्बस्व को नाशहोतहै अरु मिसकीनता नाम गरीब हैगे गरीबी ग्रहण करेतै योगनाम सुखकीप्राप्ति क्षेमनाम कल्याण को लाभहोतहै मिसकीन शब्द फारसी मे गरीबी बाचक है दूसरे तुकतें अपने उक्तिमे प्रमाणदेतहैं रावण सों मोटोनाम ऐश्वर्यवान अरु बली नहीं अरु बिभीषण सो दूबरोनाम बलहीन अरु ऐश्वर्यहीननहीं

ऐसोई अनेक प्रसंगकरि आपकी प्रेम पराधीनता बुझिपड़ी यह दरबार की सयानप जो चतुराई सो हजारों अज्ञान समान है सूधी सत्यभाव है कहेते मलीनता मिटत है, सर्वदिन गृहादि को सुधिकिये इहितें यहनिश्चय होतहै कि स्वामीतें हित रूप नेह की हीनता न होयगी अर्थात् जी जीव को त्याग नहीं करते आपके नामरूप कल्पद्रुम सकल कामना देतहै तथा स्मरणकरते कलिमल अरु छलकी क्षीणतानाम नाशहोत है हे करुणानिधान यहीवरदान तुलसी चाहत है कि तुम्हारे भक्तिरूप गङ्गाजल मो मछली होरहै ॥ २६२ ॥

मू० । नाथनीकैकैजानिबठीकजनजीयकी । रावरोभरोसोनाह कैसोप्रेम नेमलियोरुचिरसहनिरुचिमतितीयकी । दुःखत सुखतबस सबहीसों सङ्गस्यो परखि पराईगति आपने हूं कीयकी । मेरेभलेकोगोसांयै पोचकोऊ सकलकियेकहैं सौंहसांचीसीयपीयकी । ज्ञानहूंगिराकेस्वामीबाहरअन्त-र्यामीइहांक्यौं दुरैगीबात सुखकी अरु हीयकी । तुलसी तिहारोतुमहीयेतुलसीकेहितराखिकहौ हूं हैं तौसाखी पीयकी ॥ २६३ ॥

टी० । हेनाथ यह जनके जियकी ठीकनाम निश्चय नीके करि जानो कि तुम्हारो जोबिश्वास सोईनाहके आस स्वामीकरिमेरी मतिरूप जोस्त्री सो पतिव्रता को प्रेमनेम लियो यहरुचिर रहनि है अर्थात् पतिव्रता की दृष्टिमो अपने पुरुषको त्यागकरि दूसरे मो पुरुषभाव नहीं है तैसे आपको त्यागकरि मेरी बुद्धि देवता-न्तर साधनान्तरतें अपनो कल्याण नहीं देखैहै पुण्य पापके बस सबहीसों संगपस्यौ नाशभयो अर्थात् जैसो २ कर्म किये तैसो २ संगमिल्यौ तहां २ पराईगति नाम तैसन २ संगिनको कर्तव्यता परखिनाम लक्षितकरि तथा आपने हूं कीयकीनाम करणी की गतिदेखि यहनिश्चयभयो कि मेरेभले को गोसायौंनाम गोसाईं जो आप सो ई हो आन नहीं अरु हमतो पोचको नाम क्षुद्रको सकल साजकियेहैं यह अध्याहारहै सौंहकिये नाम शपथकिये जानकीनाथ को सांचो कहत हैं अर्थात् आप को छोड़ि अपनो कर्तव्यता तथा दूसरो कोऊहितकारी नहींहै चेतकहोकि ऐसो प्रतीति तोको है नहीं तो अन्तर्यामी जो आप ज्ञानादिकेस्वामी

तासों बाहर भीतरकी कैसे छिपेगी तुलसी तुम्हारोहै अरुतुमहीं तुलसी के हितकारीहो राखि कहीहूं हों नाम कपट करि जो कहैंगेतो धीकी मसखी होयगी अर्थात् जन्मिमरैंगे यहशपथहै॥२६३॥

मू०। मेरोकह्योसुनिपुनिभावैतोहिकरिसो। चारिहू बिलोचन बिलोकतूतिलोकमहंतेरोतिहूं कालकहुकोहैहितुहरिसो। नयेनयेनेहअनुभये देहगेहबसिपरिखेप्रपंची प्रेमपरत उघरिसो। सुहृदसमाजदगाबाजिहीकोसौदासूतजबजाकोकाजतबमिलैपायपरिसो। बिबुधसयानेपहिचानेकैधौंनाहींनीकेदेत एकगुणलेतकोटिगुणभरिसो। कर्मधर्मश्रमफलरघुवर बिन राखकोसोहोमहै ऊसरकोसोबरिसो। आदिअन्तबीच भलो भलोकरै सबहीको जाको यशलोक वेदरह्योहै बगरिसो। सीतापतिसारिखोसुसाहिबशीलनिधानकैसेकलपरैशठबैठो सोबिसरिसो। जीवकोजीवनप्राणप्राणकोपरमहित प्रीतम पुनीतकृतनीचननिदरिसो। तुलसीतोकों कृपालजो कियो कोशलपालचित्रकूटकोचरितचेतचितकरिसो २६४॥

टी०। रे जीव मेरे कहे को सुनिले फेर जो तोकों भावे सो करु यादो आंखि बाहरकी और दोज्ञानकी यह चारोंकरितीनों लोक तीनोंकालमें तू देखिकरि कहु तो हरिसमान तेरो हितू कौहै नएनए नेहनाम सम्बन्धी देहरूपी गृहमें बसि जहां जन्म भये तहांतहां अनुभवकिये पर प्रपञ्चकी प्रेम सबकी उघरिपरी नाम जितने जगत सम्बन्ध तको स्वारथवश प्रीति है यह हेतुते सुहृदनकीजो समाज तामें दगाबाजिही की सौदा सूतनाम सब व्यापार यह लोकोक्तिहै जबजाको काजभयो तब पायन्हपरिमिलत है जगतके नाताको मिथ्या कहि अब देवतन्हको देखावत हैं कि रे जीव देवता सब बड़े चतुरहैं नीके पहिचानि धौं नहीं कोटिगुण भरिलेतहैं तब एकगुण देतहैं अर्थात् कोटि अंश चाकरी कराय तब एक अंश मजूरी देतहैं देवतन्हको कहि अब कर्मधर्मको देखावतहैं कि रामजूके सम्बन्ध बिना सब कर्मधर्मको परिश्रमै फलहै राखको होम ऊसरके वर्षाकी नाईं सबकालमें जो भलोरूप अरु सबहीको भलोकरै तथा जाको यश लोक वेदमें बगरिनामफैलि रह्योहै ऐसे सीतापति सदृश सुन्दर खाविन्द सर्वगुणके मालिकको रे शठ तू बिसारिकरि बैठ्योहै कैसे तोको कलपरैहै हम जीवको

जीवनरूप अरु प्राणको प्राण परमहितकारी पुनीत प्रीतम ताको हात नाम उपकाररूप जो कर्तव्यता सो वे नीचनिरादर मतिकरु तुलसी तोकों यह उचित है कि कृपालु जो कोशलपाल सो चित्रकूटमो बसि जो चरित किये को भीलन्हके ऊपर गरीबनेवाजी सो चित्तमो स्मरणकरि धारण करु ॥ २६४ ॥

मू०। तनसुचिमनरुचिमुखकहौंजनहौं सियपीको। केहि अभाग जान्यौनहींजोनहोयनाथसोंनातोनेहन नीको। जलचाहत पावकलहौंविषहोतअमीको। कलिकुचालसन्तन्हिकहीसोइ सहीमोहिंकछुफहमनतरनितमीको। जानिअन्धअञ्जनकहै बनबाघिनिघीको। सुनिउपचारबिकारको सुबिचार करौं जबतबबुद्धिबलहरैहीको। प्रभुसौंकहतसकुचतहौंपरौंजनि फिरिफीको। निकटबोलिबलिबरजियेपरिहरै ख्याल अब तुलसिदासजड़जीको ॥ २६५ ॥

टी०। हे रघुबर अपने जानत शरीर को पवित्रकै मनतें रुचिकर मुखतें जानकीपति को दास कहतहौं परि यह नहीं जान्यो जात कि कौने अभागतें स्वामि सों नाता अरु स्नेह नीके प्रकार नहीं होत है ऐसो अपनो अभाग्य है कि जल चाहत अग्नि मिलत है अमृत विषहोत है अर्थात् शीतल होनेकी चाहना उलटो त्रैतापतें जलतहौं तथा अमृतरूप जो परमार्थ सम्बन्धी साधन सो संसार सम्बन्धी है विषरूप होतहै सो यह बूझिपर्यो कि कलिकाल के कुचालका सन्तन्हनेजो कही सोई सहीनाम सत्यहै मोकों तो सूर्य अरु तमीनाम अन्धकार को कछु फहम नाम बूझ नहीं अर्थात् मैं मन्द बुद्धि जब अपने को उलटो फल होन लग्यो तब कलिकाल की प्रबलता अरु सज्जनन्ह को कही सांच जानिपरी है स्वामी कलिकाल को कौतुक देखो मोकों अन्ध जानि अञ्जन बतावत है कि बनके बाघिनिको घी नेत्रमो करु तब सूझैगो यह अपने नेत्रके बिकारको उपचार सुनि जब सुन्दरबिचारकरतहौं तब हृदयमो बुद्धिको जो बल सो हरै नाम नाशतहै अर्थात् ज्ञानरूप नेत्रते मैं होन ताको बनकी बाघिनिरूप जो कामना घृततुल्य विषययह अञ्जनबतायो तौ बाघिनितें अपनोप्राण बचानोई दुर्लभ है घी कब मिलैगो तद्वत् विषय कामनाकरि सकल आयुर्बलको नाश होयगो ज्ञानरूप आंखि के होने की कौन प्रतीति है ऐसी

औषधिको विचार बुद्धि के बलको नाश होत है यह भाव है हे प्रभु आपतें एकविनय है पर कहते सकुचात हौं कि फिरि फोको न परों अर्थात् इतने दिनतें विनय करत २ ड्योढ़ीके सन्मुख खड़े होनपावत हों सो ऐसा न चित्तमो आवे कि रोज अपनो मतलब कहत है याको निकालो यद्यपि यह सन्देह होत है तथापि कहत हौं कि कलि जीव यह कलिकालको निकट बोलाय मना करिदेव कि तुलसी दास जो जड़ जीव ताके ख्यालको छोड़िदे अर्थात् मेरे पीछे परयो है सो आपकी आज्ञातें कलिकाल मोको छोड़ेगो ॥ २६५ ॥

मू० । ज्यौं ज्यौं निकट भयो चहौं कृपाल त्यौं त्यौं दूरि पर्‌यो हौं। तुम चहुं जुग रस एक राम हौं हूं रावरो यद्यपि अघ अवगुननि भर्‌यो हौं। बीच पाइ नीच बीच ही छरनि छर्‌यो हौं। हौं सुबरन कुबरन कियो नृपतें भिखारि करि सुमतितें कुमति कर्‌यो हौं। अगणित गिरि कानन फिर्‌यो बिनु आगि जर्‌यो हौं। चित्रकूट गये मैं लखी कलिकी कुचालि सब अब अपडरनि डर्‌यो हौं। माथ नाइ नाथ सों कहौं हाथ जोरि खर्‌यो हौं। चीन्हों चोर जिय मारि है तुलसी सो कथा सुनि प्रभु सों गुदरि निबर्‌यो हौं ॥ २६६ ॥

टी० । हे कृपालु ज्यों ज्यों निकट भयो चाहत हौं त्यौं २ दूर परत हौं तुम चारौं युग एक रस हौ अरु मैं यद्यपि औगुण तें भर्‌यो हौं तदपि तुम्हारो हौं। अपने शरणते जुदा मति करो बीच पाय नाम तुमतें विमुख मोको जानि नीच जो कलिकाल सो बीचही नाम जब तक तुम्हारे सन्मुख न होने पाये तबही तक छरनि नाम अपनी कुटिल जो कर्तव्यता मति भ्रंश करबेको मंत्ररूप तेहितें छर्‌यो हौं नाम मेरी बुद्धि को भ्रष्ट करि दियो अर्थात् सुखकों दुख दुखकों सुख बूझने लग्यो तथा सुवर्णरूप जो मैं ताकों कुबरण नाम रांगा शीशा तुल्य कियो अर्थात् सतचित आनन्दरूप जो मैं ताकों असत: जड़ दुखरूप करि डार्‌यो अरु राजातें भिखारी करि नाम ज्ञानादि ऐश्वर्य करि राजा बने रहे तेहि ऐश्वर्यके भ्रष्ट भये दरिद्री ह्वै गये तथा सुमतितें कुमति कर्‌यो नाम जो बुद्धि परमेश्वर मो लगी रही सो संसार के विषयमो लगी है रघुवंर अनेक पर्वत जंगल फिरे पै बिना आगि जल्यो अर्थात् ताप छूटबेके वास्ते अनेक जगह गये तहां तहां उलटा तापते तप्तभये ताहूपर यह पहिचानो न गयो कि केहते जलत हौं तब चित्रकूटमो गयौं तहां मैंने कलिकालकी कुचाल लखी कि याही की कर्तव्यता

ते मैं दुख सहतहौं सो अब पहिचानितें अपने डरते डरयौ हौं याको अभिप्राय अगिले तुकतें कहतहैं हाथ जोरि माथ नमितकरि खड़ो रहो नाथसों कहतहौं कि अबतक कलिकाल रूप चोरको चीन्हे नहींरहो अब चित्रकूटके प्रभावते पहिचाने तो यह लोकमों प्रसिद्ध है कि चीन्हे चोर अवश्य जीवमारतहैं तुलसी सो कथा लोक मुखते सुनि यह बूझ्यौ कि अबयह कलिकाल मोको बेमारे न छोड़ेगो सो प्रभु सों गुहरिनाम कहिकरि निबह्यौहौं नाम चप होतहैं अर्थात् आपतें जनावने मात्र अपनी शक्तिहै सो जनाय दिये ॥ २६६ ॥

मू०। प्रणकरिहौं हठिआजतें रामद्वारपरयौहौं। तू मेरोयहबिनकहे उठिहौं नजन्मभरिप्रभुकीसौंकरिनिबरयौहौं। दैदैधक्कायमभट थकेटारेनटरयौहौं। उदरदुसहशासतिसहीबहुबारजन्मिजगु नर्कनिदरिनिकरयौहौं। हौंमचलालयछांड़िहौंजेहिलागिअरयौ हौं।तुमदयालबनिहैदियेबलिबिलंबनकीजियजातगलानिगरयौ हौं। प्रकटकहतजोकुछुचियेअपराधभरयौहौं। तौमनमेंअप-नाइयेतुलसिहिकृपाकरिकलिबिलोकिहहरयौहौं ॥ २६७ ॥

टी०। प्रतिज्ञाअरु हठकरि आजुते हेरघुबर तुह्यारे दरवाजे पर पड्यौ तू मेरोहै इतनो कहे बिना जन्म पर्य्यन्त उठोंगो नहीं प्रभुको शपथकरि निबरयौहौं नाम भोजनादि क्रियातें निवृत्तहोतहौं अर्थात् धारणाकरि ब्राह्मण शरीर देत हौं तद्वत् यमके दूत सबधक्का देदैथकि गये पर मैं टारेतें टर्यो नहीं तथा पेटको दुस्सह सो शासति सोबहुत बार जगत में जन्मलै करि सही कहूं मारकर्म बसनरकमोपड़ो ताको निरादरकरिनिकल्यो अर्थात् बेदियेहमको उठावनेचाहौसो नहोयगो काहेकियमदूतनके धक्काको मैंनेसहीहै तबऔरन्हकेधक्कातें कबउठूंगो चेत यह विचारकरो कि अत्यन्त क्षुधा लगे आपै उठि जायगो तो जन्म जन्म क्षुधाकी पीड़ा सहते अभ्यास है भूखकरि हमभागनेवाले नहीं चेत और कोऊ क्रोध देवेको बिचार करो तो नरककेक्लेशों को बारबार सहेहैं तेहतें अधिककौन दुख देवगे जेहतें व्याकुलह्वै म भागूंगा हे रघुबर मैं मचलानाम हठीह्वै जेह लागि अड्यौहौं सोलै-कर छोड़ूंगो अबतुम दयाल हौ बलिजांव दिये बनेगो अर्थात् मरने न देवगे तौ बिलंब मति करो मैं गलानितें गल्यो जातहौं याकोयह भाव भयौ कि दिये ब्यतिरेक मोको उठाय सकोगे नहीं अरु अपनी कृपालुतातें मरने देवगे नहीं तब काहेको देरकरतहौ तथा मैं कछ

ऐश्वर्य मांगत नहीं एकबार कहि देव कि तू मेरा गुलाम है चेत अति नीच अरु बेपौरुष निकम्मा अरु अपराधतें पूर्ण बूझि प्रकट कहत जो सकुचिये तो मनमें अपनाइये कृपा करि तुलसी को देखि हहरयौ हैं। नामके पौरुषहैं। अत्यन्त डरयौ हैं। ॥ २६७ ॥

मू०। तुम अपनायौ तब जानिहौं जब मन फिरि परिहै। जेहि सुभाय विषयनि लग्यौ तेहि सहज नाथसों नेह छांड़ि छल करिहै। सुत की प्रीति प्रतीत मीत की नृपज्यों डर डरिहै। अपनो सो स्वारथ स्वामीसों चहुं विधि चातक ज्यों एकटेकतें नहिं टरिहै। हरषि हैं न अति आदरे न जनिसरिहै। हानि लाभ दुखसुख सबै समचित हित अनहित कलि कुचाल परिहरिहै। प्रभु गुण सुनि मन हरषिहै नीर नयननि ढरिहै। तुलसिदास भयो रामको विश्वास प्रेम लखि आनन्द उमंगि उर भरिहै ॥ २६८ ॥

टी०। चेत कहै कि जो हम मनसों अपनो किये तो कैसे जानैगो सो सुनो तुम्हारो अपनायो तब जानूंगो जब मन फिरि जायगो नाम जौने स्वभाव तें विषयन सों लग्यौ है तौने सहज स्वभाव तें छलत्याग करि स्वामी सों स्नेह करैगो पुत्रवत् प्रीति मित्रवत् प्रतीति प्रजा जैसें राजातें डरे तद्वत् डर अरु अपनो सो नाम अपने ओरतें चहुं विधि स्वारथ नाम अर्थ धर्म काम मोक्ष स्वामीसों प्राप्त मानैगो अरु चातक की नाईं एकटेकतें नटरिहै काहू के आदर किये हर्ष अरु निरादर किये न जनिसरैगो तथा हानि लाभ दुख सुख हित अनहित यह सब सों समचित्त अरु कलिके कुचालके छांड़ैगो प्रभु के गुण सुनते मनसों हर्ष अरु आंखिनते जल गरैगो सुतकी प्रीति आदि नीर नयनन्ह ढरिहै इहां पर्य्यन्त जितने गुण कहेसो जब दृढ़ होंयगे तब तुलसीदास रामको भयौ स्वामीने अपनायौ यह निश्चय जानैगो आपने हृदय को विश्वास अरु प्रेम लखि करि आनन्द उच्छलित होय हृदय को पूर्ण करैगो यह बिनय है ॥ २६८ ॥

मू०। राम कबहुं प्रिय लागिहौ जैसे नीर मीन को। सुखजीवन ज्यों जीवको मणि ज्यों फणि को हित ज्यों धन लोभ लीन को। ज्यों सुभाय प्रिय नागरी नागर नवीन को। त्यों मेरे मन लालसा करिये करुणाकर पावन प्रेम पीन को। मनसा को दाता कहै श्रुति प्रभु प्रवीण को। तुलसीदास को भावतो बलि जाउं दयानिधि दीजै दान दीन को ॥ २६९ ॥

टी०। उत्कंठा करि याचत हैं जैसे मीन आदि अपने २ विषय को

प्रिय मानत हैं तैसें पवित्र जो तुम्हारे चरणकमल की प्रीति पीन नाम दृढ़ याको कबहो नाश नहीं तासों मेरे मनकी लालसा करो यह प्रार्थना है प्रभु प्रवीण जो आप ताको ,वेद मनसा को दाता कहत हैं नाम याचक के मनमों जो अभिलाष उठै सो वेकहे पूर्ण करनेवाले तो तुलसीदास दीन को हे दयानिधि बलिजांव भाव-तौ दानदेव २६९ ॥

मू०। कबहुंकृपाकरिरघुबीरमोहुं चितैहो। भलो बुरोजनआपनो जियजानिदयानिधिअवगुणअमित बितैहौ। जन्मजन्महोंमन जित्यौअबमोहिंजितैहैा। हैांसनाथ ह्वैहौं सहीतुमहुं अनाथ पतिज्यौंलघुहि नभितैहैा। बिनय करोंअपभयहुतैतुमपरम हितैहैा। तुलसिदास कासौं कहै तुमहींसबमेरेप्रभुगुरुमातु पितैहैा ॥ २७० ॥

टी०। हे रघुबर कबहूं कृपाकरि मोहुं को देखोगे भलो बुरो तुम्हारोजन जोमैं ताको अपनोजियमें जानिहो दयानिधि अमित जो औगुण मेरे ताको बितैहैा नाम समाप्तकरोगे जन्म जन्मसोके मनने जित्यौ अब मोको जितावोगे जो मेरीलघुता के विचारि न भितैहैा नाम न डरोगे तो मैं सहीनाम निश्चय सनाथ ह्वैहों अरु तुम्हारहु बाना अनाथपति जगतमों बिदित होयगो अपने भयते बारबार बिनयकरतहैां यहबिचारि कि तुम मेरेपरमहितहोआपै कहो हे स्वामी कि तुलसीदास अपनो दुखदूसरे कासौंकहै काहे कि मेरे स्वामी गुरु माता पिता सब तुमहीं हैा यह मनोराज्य को बिनय है ॥ २७० ॥

मू०। जैसो हौंतैसोहैांरामराबरोजनजनि परिहरिये। कृपा सिन्धु कोशलधनीशरणागत पालकढरनि आपनी ढरिये। हैांतो बिगरायलऔरकोबिगरो नबिगरिये। तुम सुधारिआयेसदा सबकी सबहींबिधिअबमेरियोसुधरिये। जगहंसिहैंमेरेसंग्रहे कतयहिडरडरिये। कपिकेवटकीन्हेंसखाजेहिशीलसरलचित तेहिसुभावअनुसरिये। अपराधीतउआपनी तुलसी नबिस-रिये। टूटियो बांह गरेंपरै फूटेहुंबिलोचनपीर होत हित करिये ॥ २७१ ॥

टी०। हे रघुबर जैसे तैसे हैं। पै तुम्हारो हैां यह जन को त्याग मति करो ढरनि आपनी ढरिये नाम पतित पावनादि बाना को

स्मरणकरि कृपाकरो हमतो चोर को नाम आदि को बिगराअथवा नाम बिगड़ेहैं तो बिगड़ेको न बिगाड़िये अरु तुमसर्वदा सबजीवन्ह को सबप्रकारतें बनाय आये यह बूझि मेरोयो सुधारिये हम ऐसे नीच जीव के संग्रहकिये जगत हंसेगो यह डरतें काहे डरत हौ जौने शील अरु चित्तकी सरलता तें वानर भालु मलाह को मित्र किये तौने स्वभाव को अनुसरिये नाम ग्रहणकरो अर्थात् नीचन्ह के ऊपर कृपाकरनी यह तो आपकी सनातन की बिरदावली है तब मेरे ग्रहणकिये जगतके हंसबे की क्यों चिन्ताकरत हौ तुलसी अपराधीहै तऊ आपकोहै यह बूझि बिस्मरण मतकरो यहप्रसिद्ध कि अपनी बांहटूटिजातहै तब काहूकाम नहीं करत अधिकपीड़ा देतहै तथापि कोऊ काट नहीं फेंकतगरेपरे नामगलेमें बांधत है तथा फूटीहुई आंखि काहू कामकी नहीं होति पर जो पीरनाम वामो दुख होत है तौ हित किये नाम. औषधादि करि दुख को छोड़ावत हैं तद्वत् मोहूको बूझो ॥ २७१ ॥

सू० । तुमजनिमनमैलोकरोलोचनजनिफेरो । सुनहुंरामबिनुरावरे लोकहुंपरलोकहुं कोउन कहूं हितमेरो । अगुण अलायक आलसीजानिअधमअनेरो । स्वारथके साथिन्हतज्योतिजरा कैसोटोटकअवचटउलटिन हेरो । भक्तिहीनबेदबाहरोलखि कलिमलघेरो । देवनिहूं देवपरिहर्योअन्यावन तिनकोहौं अपराधीसबकेरो । नामकीओटलैपेटभरतहौं पैकहावतचेरो । जगतविदितबातह्वैपरीसमझियेधौं अपनेलोककी बेदबड़ेरो । ह्वैहै जबतबतुमहूहिंतेतुलसीको भलेरो । दिनदिनहूं दिन बिगरिहैबलिजांउबिलम्बकियेअपनाइयेसबेरो ॥ २७२ ॥

टी० । हे स्वामी हमतें मनमैलो नाम उदासीन जनिकरो अरु नजरमति फेरो काहे कि दूसरो मेरो कोऊ है नहीं गुण रहित कोउकामके लायकनहीं सब उद्यमसे आलसी अरु निर्धन अनेरो नाम काहूके निकटरहबेयोग्य नहीं ऐसोजानि स्वारथके साथिन्ह नाम जगत के सम्बन्धी सब त्याग कियौ तिजरा के टोटका समान धोखेहू उलटि नाम फिरिकरि नहेरो नाम नहीं देख्यौ अर्थात् तिजराज्वरजाको आवतहै ताको टोटकानाम उताराकरि चौरहा में धरिआवत वाको फेरिफिरिकरि नहीं देखनो यह विधिहै तद्वत् मोको भूलहू जगत के सम्बन्धीन्हते न देख्यौ भक्तिरहित वेदवाह्य

कर्म कलिमलते घेरयोजानि है देव देवतन्ह परित्याग कियो सो उनको अन्याव नाम बेइन्साफी नहीं है उचितै कियो काहेकि हम सबके अपराधीहैं अर्थात् तेह सब देवतन्हको वेदविहित कर्मकरि सेवा पूजा न किये तो अपराधी भये ऐसे को त्यागै चहिये और काहू कामके नहीं पर नाम की ओटलै पेटपालनकरत हैं। आप को दास कहावत यह जगतमें बात विदित है परीसो आपैसमुझिये किलोक वेदसोकौ बड़ोहै अर्थात् वेदसोकौन कर्तव्यता कही है सो जो लोकविरुद्ध होतहै से। सज्जन सब नहीं कहते यहहेतु तें लोक बड़ोहै से। लोक मोको रामगुलाम कहतहैं तौ अब आप क्रो त्यागकरनो न चहिये यहभाव है तुलसी को यह निश्चयहै कि जब तव तुमहीतें भलोहोयगो अरु बिलम्बकिये तोजरीेज बिगड़ैगी तो बलिजाव अब सबेरे अपनो करो ॥ २७२ ॥

मू० । तुमतजिहैा कासौंकहाैं औरको हितमेरे । दीनबंधु सेवक सखा आरतअनाथपरसहजछोहकेहिकेरे । बहुत पतितभव निधितरे बिनतरिबिनबेरे । कृपाकोप सत्य भायहूं घोखेहूं तिरछेहूंरामतिहारेहि हेरे । जोचितवनिसौंधीलगैचितइये सबेरे । तुलसिदासअपनाइयेकीजैनढीलअब जीवनअवधि अतिनेरे ॥ २७३ ॥

टी० । आपसमान दूसरोकोउ नहींतो केहतेंकहैं बहुतपतित संसारसमुद्र के पारभये बिनबेरे अरु तरि नाम नाव तेहबिना अर्थात् साधनरहित जीव कृतार्थभये केवल कृपाकरि अहल्या अरु कोपतें रावणादि सत्यभावतें निषाद घोखेतें कबंधादि तिरछे देखे तेरास्ताके हलपशु यहसब तुम्हारे देखबेमात्रतें कृतार्थभये जोआप की चितवनि नाम कटाक्ष सौंधीलगै नाम सस्ती लग्यौ है अर्थात् पशु पक्षी जड़न्ह के ऊपर होतहै तेह चितवनितें मोहूं को सबेरे देखिये जीवनकी अवधि अतिनिकटहै अबढील जनिकरो तुलसी-दासको शीघ्र अपनो जानो यह बिनयहै ॥ २७३ ॥

मू० । जाउंकहांठौरहैकहांदेवदुखितदीनको । कोकृपालस्वामी सारिखोराखे शरणागतसब अंगबलविहीन को । गणिहिं गुणिहिंसाहिबलहै सेवासमीचीनको । अधमअगुणआलसिन्हि कोपालबोफबिआयोरघुनायकनबीनको । सुखकैकहैाविदितं

हैजोकोप्रभुप्रवीनको । तिहुंकालतिहूंलोकमेंएकटेकरावरी तुलसीसेमनमलीनको ॥ २७४ ॥

टी० । दूसरो ठौरनहीं तौ कहांजाऊं तथा सबअंग जोसाधन ताके बल करि हीन जो जीव ताको शरण के दाता तुम छोड़ि दूसरो है नहीं गनी जो धनवान गुणी गुणवान अरु सेवा मो समीचीन नाम प्रवीण ऐसे चाकर को सब साहेब चाहत हैं पर निर्धन गुणहीन आलसी जीवन्ह को पालनो रघुनायक नवीनको नाम जाको ऐश्वर्य सबदिन नवीन रहत है ताही को फबिआयौ नाम योग्य है अब सुखकरि अधिक कहा काहूं प्रभु जो प्रवीण ताको जीकी विदित है तीनौकाल तीनों लोकमो तुलसीसे मन मलीनजीव को एक तुम्हारीये टेकनाम अवलम्ब है ॥ २७४ ॥

मू० । द्वारहारदीनताकहीकाढ़िरदपरिपाहूं । हैदयालदुनीदसदिशा दुखदोषदलन न अमंकियोनसंभाषणकाहूं । तन जनेउ कुटिल कीटज्यौंतज्यौमातुपिताहूं । काहेकोरोसदोषकाहिधौंमेरेही अभागमोसोंसकुचतेसबकछुइछाहूं । दूखितदेखिसन्तन्हकह्यौ सोचेजनिमनमाहूं । तोसेपशुपांवरपातकी परिहरे न शरण गयेरघुबर ओरनिबाहूं । तुलसी तिहारो भयेभयौ सुख प्रीति प्रतीतिबिनाहूं । नामकीमहिमाशीलनाथकोमेरोभलोविलोकि अबतेसकुचाहूंसिहाहूं ॥ २७५ ॥

टी० । चेत पूछोकि और काहूतें याच्योहै कि नहींतो हे स्वामी दरवाजेपर दांतकाढिपांवपरिअपनीदीनता कही अनेक स्वामीदुनी जो संसारतासोदशो दिशाविषें दुखदोषके दलन करवेमो अमनाम समर्थ अरु दयाल कहावतहैं पर मेरो संभाषण नाम सत्कार काहू ने न कियौ यह शरीर को उत्पन्नकरि पीछे भाग्यहीनजानि कुटिल कीट की नांई हितकारी जो माता पिता ताहूने त्याग कियौ तेह पर काहेको रोसकरैं अरु काकोदोषदें मेरोई अभाग्य है किछांह नाम मेरी परिछाहीं छुइ करि मोसों सब सकुचत हैं अर्थात् कृपा कब करैंगे निकटऊ नहीं जानदेते मोको दुखी देखि कृपाल संतन्हने कह्यौकि शोचमनमो मतिकरे तेरे ऐसेपातकी नीचपशुतुल्यजीवको शरणगये रघुबरनहीं छोड़ते और निबाहू नामआदि अन्त निबाहत हैं सज्जनन्हके उपदेशकरि जबतें तुम्हारो तुलसीभयो प्रीति प्रतीति बिनाहूं नाम निष्ठा नहीं है केवल हमराम जू के गुलाम हैं इतनो

मनमें लै आवते सुखी भयों सो नाम की महिमा अरु स्वामी की शील तथा मेरो भलो देखिकरि अबते नाम जो जो निरादर करि अपने निकट न जाने दिये सो सकुचाऊं सिहाऊं नाम ऐसो बूझें कि याको हम बात न पूछे सोई त्रिलोक नायको गुलाम भयो ऐसे सिहाय करि सकुचाऊं जो हम पहिले याको तिरस्कार किये सो भलो न कियो यह भाव है ॥ २७५ ॥

मू० । काहा न कियोंकहांनगयोंशीसकाहिननायों । रामरावरोबिन
भयेजनजन्मि२जगदुखदशहूं दिशदिशपायों । आस विवसखास
दासह्वैनीचप्रभुनिजनायों । हाहाकरिदीनताकहीद्वारद्वार
बारबारपरीनछारमुंहबायों । असनबसनबिनबवरोजहंतहं
उठिधायों । महिमाअरुप्रियप्राणतेतजिखोलिखलनिआगेखिन
खिनपेटखलायों । नाथहाथकछुनाहिंलग्यैालालचललचायों ।
सांचकहैांनाचकौन सोजौन सोहिं लोभलघुनिलजनचायों ।
श्रवणनयनमनमगलगेसबथलपतितायों । मूंडमारिहियहारि
कै हिंतहेरिहहरिअबचरणशरणतकिआयों । दशरथकेसमरथ
तुहींत्रिभुवनयशगायों । तुलसीनमतअवलोकियेबलिबांहबोल
दैबिरदावलीबुलायों ॥ २७६ ॥

टी० । हे स्वामी सब किये पर तुम्हारे दासभये बिना सर्वत्र दुख पाये आशातें पर बस ऐश्वर्यवान्हन के खासदास ह्वै करि नीच जो मैं सो तैाने प्रभुतें अपनो अभिलाष जनायों हाहाकरि नाम अतिदुखी ह्वै द्वारद्वार सो अपनी दीनता बारबार कही पर मुंहबायों जो मैं तासो छारनाम राखऊनपरी अर्थात् सबको यांचे पर दरिद्रबने रहे भोजनवस्त्र बिनाबावरेह्वै जहांतहां उठिदौड़े अरु प्राणहुतें अधिक प्रिय जो महिमा नाम प्रतिष्ठा सो त्यागकरि खलन्हके आगे क्षण २ सो खोलिनाम उघारोकरि पेटखलायों नाम क्षुधाकरि सूख्यो जो उदर सो देखायों हे नाथ जो न करबे को सो सब किये पर कछू न हाथलग्यै तथापि लालच ललचावतहै सांचकहतहों कि कौननाच ऐसो है जो तुच्छ लोभ निर्लज्जने मोको निलज नाम निर्लज्जकरि न नचायो श्रवण नेत्र मनमग नाम राह विषय रूप तासो लगेरहे पर सब थल नाम सब स्थानमो पतितायो नाम पतिताइये मिलोआन कछू नहीं तब मुण्डमारि नाम माथेपीटि हृदयते हारि अपने हित को हेरिनाम देखिकहरि नाम थाकिकरि अब आपके चरणके शरण

को आयौहै हे, दशरथ के पुत्र तुमहीं समर्थहौ तीनोभुवन यशगावत है बलिजांव नमस्कार करत जो तुलसी ताको देखो आपकी जो बिरदावली सोई बोलरूप बांहदै मोको बोलायहै अर्थात् तुम्हारे बाना ने बार २ मोकों कह्यौ कि निर्भयहोय तो शरण मो आव निकालो न जायगो हमसत्र बहियां हैं तब मैं आयौहैं। यह अर्थहै ॥ २७६ ॥

मू०। रामरायबिनुरावरेमेरेकोहितू सांचो । स्वामीसहित सबसों कहौंसुनिगुनिविशेषिकोउरेख दूसरीखांचो । देहजीवयोग के सखामृषटांचनटांचो । कियेविचारसारकदलीज्यौंमणिकन कसंगलघुलसत बीचबीचकांचो । बिनयपत्रिकादीनकीबापु आपुहीबांचो । हियेहेरि तुलसीलिखी सोसुभायसहीकरि बहुरिपूंछियहिपांचो ॥ २७७ ॥

टी०। हे महाराज राम तुम्हारे बिनु मेरो सांचो हितू को है स्वामीं जो आप तेह सहित सबसों नाम जितने विवेकी अरु ऐश्वर्यवान् तासों कहत हौं कि मेरे सांचे हितू केवल रामजू हैं और सब झूठे हितकारी बने हैं यह मेरीप्रतिज्ञा सुनिगुणि नाम अपने अपने जीमो बिचारकरि विशेष तें कोऊ दूसरी रेखा खांचो तो अर्थात् तुमहीं मेरे हित हौ दूसरो नहीं यह मेरी रेखा है ताको मिटाय दूसरी रेखा खांचो नाम दूसरे को हित बतलावो तो आप सहित सब तें यह कहत हौं देहको जीव जीवको देहनिरन्तर संग करि परस्पर हितकारी प्रतीति होती हैं सोऊ योगके नाम संयोग के सखा हैं अर्थात् यावत एकत्र भये हैं तावत् परस्पर हित की प्रतीति है जुदाभये देह जीवको जीव देहको फेर नहीं पूछत यह मुह देखी कपटकी प्रीति है सोऊ संयोग म्रषा नाम झूठो टांचन नाम टांकी करि टांचो नाम मिलायौ है अर्थात् देह जीवको जो संयोग सो मिथ्या अविद्या मायाकरि मिल्यौ है तो जब टांकियेझूठ तो ताको मिलायो सोऊ कैसे सत्य होय बिचार किये तें जैसे केरा के खम्भको छीले ते सार नहीं मिलत तैसे तेह देह जीवके संयोग मो सत्यता नहीं देखि पड़ती मणि अरु सोनाकें संगमो बीच बीच तुच्छ जो कांचु सोहत है अर्थात् मणि अरु सोनाके दाना मो बीच बीच जौं कांचु रहे तौ दो सच्चे के बीचमो झूठो जो कांच सोऊ सांचकी नाईं भासत है तैसे मणिरूप जो परमेश्वर तेहका विकार सोनारूप जो जीव यह दोऊ रूखे के संगमो बीचबीच तुच्छ कांचरूप

विषय इन्द्रिय देहादि अविद्यामायारूप सोऊ सांचकीनाईं प्रतीति होतहै परतीनों कालमो मिथ्याहै पूर्वोक्त हेतुकरि केवल रामजू यह जीवको सांचो हितू निश्चयभये तेहतें कहत हैं कि दीनेकी यह जो विनय पत्रिका सो बाप नाम हे पिता आपु हीबांचो हृदय हेरिनाम जितनो बुद्धिको बलरह्यो तेहतें बिचारि तुलसीने लिखीहै सो सुभाव नाम दीनबंधुता सरलता जिहतें गृहको पिता शबरीको माताजाने कोलभील के बचन को पिता सम प्रियमान सुने अरु बानर भालुको मित्रकिये तेह स्वभावतें यह दीन की बिनयपत्रिका को सही करि नाम दसखतकरि तब फेर पूछियो पांचोनाम पंच जो सभा अर्थात् अपने कोमल स्वभावतें पहिलेदसखतकरि पीछे पंचन्हतें पूछोगे तब कोऊबुरो न कहिसकैगो अरु जो पहिले पूछोगे तब काहूनेकहि दियो कि अति गंवार की पत्रिका है आपके देखबे योग्य नहीं तौ हे स्वामी जितनो अपने बुद्धि को बल तेह करि याको लिखो अब दूसरो कोह बुद्धितें लिखैगो हिये हेरि पद दिये ताको यह चौज है अरु बाप संबोधन कहे ताको यहअभिप्राय है कि जो अत्यन्तबालक ताको दूसरो शब्द कहबे की गति नहीं सो पिता को सूधो अक्षर बाप कहत है अरु तेह बचनको अत्यन्त प्रीतितें पिता सुनतहै तैसे अति अज्ञमन्द जीव बालकरूप जो मैं ताकी यह विनयपत्रिका बाप पद कहबेतुल्य चतुराईके गुणतेंरहित ताको पितासमान सुनि सही करो यह बिनय है ॥ २७७ ॥

मू० । पवनसुवनरिपुदवनभरतलाललखनदीनकी । जिन२अवसरसुधि कियेबलिजाउंदासआसपुजिहैखासखनकी । राजद्वारभलीसब कहैंसाधुसमीचीनकी । सुकृतसुयशसाहबकृपास्वारथपरमारथ गतिभयेगतिबिहीनकी । समयसंभारिसुधारिबीतुलसीमलीन की । प्रीतिरीति समुझाइबी नतपाल कृपालुहिपरमितिपरा धीनकी ॥ २७८ ॥

टी० । स्वामीतें विनय करि अब भ्राता अरु महाबीर जो स्वामी को अतिप्रिय ताको सन्मुख करतहैं सबको संबोधनकरिकहतहैं कि यह दीनकी अपने अपने औसरमो सुधिकिये नाम जब याकों समय मिले तब मेरी बात स्वामीते कहिजावं बनायकहियो यद्यपि यह दासखीन नाम तुच्छहै तथापि आप सबके सहायतें खास दासनकी आस पूजैगी अर्थात् आप सबके केवल बचन सहायते मोसाहबन्ह

की नाईं आदरपावो चेतकहो कि तू कौन बड़ोपाच जेहकीबात हम सबकहैं तौसुनो राजद्वारमो साधु जोसमीचीन नाम भलो ताकी भली तो सब कहत हैं पर गति बिहीन नाम भाग्य रहित जो हम ऐसे जीव ताकी गतिभये नाम अवलम्ब दिये पुण्य अरु सुयश तथा खामिन्द की कृपा अरु स्वारथ परमारथ होतहैं ऐसे बिचारि सहाय करो समयसंभारि नामजब स्वामी को मन प्रसन्न पावो तब तुलसी मलीन की सुधारिवी नाम बनाय कहियो नतपाल अरु कृपाल जो स्वामी तेहतें यह जो पराधीन ताकी प्रीति रीतिकी परमिति नाम प्रमाण समुझाय देनो यह बिनय है ॥ २७८ ॥

मू० । मारुतिमनरुचिभरत कीलखिलखनकही है । कलिकालहुं नाथ
नामसोंप्रतीतिप्रीति एककिंकरकीनिबही है । सकलसंभासुनि
लैउठीजानीरीतिरही है । कृपागरीबनिवाजकीदेखत गरीबको
साहसबांहगही है । बिहंसिरामकह्योसत्य है सुधिमैंहुंलही है ।
मुदितमाथनावतबनीतुलसीअनाथकीपरीरघुनाथसही है २७९॥

टी० । गोसाई की यह प्रतिज्ञा रही है कि यावत् स्वामी स्वीकार मोको न करैंगे तावत् बिनय न छोड़ूंगो यह निश्चयको जानि महाबीरजू कृपाकरि श्रीरघुबरजुके दरबारकी बात गोसाईंतें कहत हैं कि मारुति जो मैं अरु श्रीभरतजू कि रुचि लखिनाम देखि श्री लक्ष्मणजूने कही है कि हे स्वामी कलिकालऊ ऐसे कालमो आपके नाम सों प्रीति प्रतीति एककोऊ आपके दासकी निबहि गई है श्री लक्ष्मणजूके कहबे मो यह हेतु है कि जो अति निकट रहत है सो विशेष ते मुंहलगा होत है तहां श्रीभरतादि सभा के अधिकारी हैं अरु श्री लक्ष्मण जू महल अति एकान्त स्थान मो जुदा नहीं रहते तेहतें स्वामी सों ढीठहैं सबकी रुचि अरु अपनी भी प्रसन्नता बूझि कहे सकल जो अयोध्या की सभा सो श्री लक्ष्मणजू को वचन सुनि लैउठीनाम बोलि उठी की जानीं रीति रही है नाम हम सब भी जानतहैं अर्थात् श्री भरतादि मुख्यस्वामी के अंग ताकी रुची अरु श्री लक्ष्मणजू सदृश प्राणप्रिय सिपारस करनेवाले तेहि बातकी को प्रमाण न करे तेहि समयमो सबके वचन कों सुनि तब श्रीभरत जू बोले कि तुम सब सम्यक नहीं बूझे वह दीन जीव क्या निबाहेगो गरीबनिवाज जो स्वामी ताकी कृपाने हम सबके देखते तेहिगरीब को साहसनाम हठतें बांहपकड़ी है अर्थात् स्वामीकी कृपाते नाम

विषै वाकी निष्ठा कौ निबाही है सबकी सुनि तब स्वामी हंसिकरि कह्यौ कि यह सत्य है मैंहूंने सुधिपाई है तहां केहतें सुधिपाई है यह नहीं कह्यौ अरु हंसिबोले याको यह अभिप्राय है कि पहिलेते श्री जनकनन्दिनी महाराणी कौ बिनयकरि गुसाईं प्रसन्नकिये हैं समय पाय कै वाही महाराणी ने सहै की है तेहि हेतुतें नाम नहीं कहे यह सब समाचार सभा की अरु स्वामी की प्रसन्नता श्रीमहावीर कहिकरि गोसाईंतें कहत हैं कि हे तुलसी अनाथ जो तू ताकी रघुनाथ के दरबारमो सही परी नाम गुलामन्हमो लिख्यौ गयौ अब आनन्द होकरि नाथनावत नाम प्रणाम करत रहु बिनय करबे को कछू प्रयोजन नहीं बनीनाम सब प्रकार तें तेरी बनी यह रीति तें गोसाईं कृतार्थ भये ॥ २७९ ॥

इति श्रीतुलसीदास कृता विनय पत्रिका समाप्तः ॥

दोहा ॥

भोजवंश अवतंसकहि जैप्रकाश महराज।
रजधानी डुमरांवमैं हैतिन सुभग समाज।
तिनकेलघुभाईसुहृद शिवप्रकाशजिहिनाम।
तिनने यह टीकाकरी सकलशास्त्रकौ धाम।

| नामकिताब | नामकिताब | नामकिताब |
| --- | --- | --- |
| वैद्यमनोत्सव | प्रेमरत्न | शिक्षावली |
| अमृतसागर बड़ी | तुलसी शब्दार्थ प्रकाश | भोजप्रबंधसार |
| अमृत सागर छोटी | यमुनालहरी | राजनीति |
| औषधि संग्रह कल्पवल्ली | रसराज | स्त्रियों की हितो पत्रिका |
| रामविनोद | कृष्णप्रिया | अवध का भूगोल |
| अमर विनोद | बिहारी सतसई | भूगोल दर्पण |
| शालहोत्र | प्रबोध चंद्रोदय नाटक | भूगोल वर्णन |
| **पुस्तक पूजा पाठ** | लावनी शेर बनारसी | भूगोल तत्व |
| विष्णुसहस्रनाम उर्दू नागरीटीकासह | रागप्रकाश | पशुचिकित्सा |
| दुर्गापाठ सटीक | युगल विलास | गणित कामधेनु |
| दुर्गापाठ मूल | सभाविलास | कवित्तरत्नाकर |
| वैष्णवी संध्या | मनोहर लहरी | बीज गणित १ भाग |
| अपराध भञ्जन स्तोत्र | गीतगोविंदादर्श | तथा दूसरा भाग |
| महिम्न स्तोत्र मूल व उर्दू टीकासह | चित्रचंद्रिका | काव्यसंग्रह |
| गोपाल सहस्र नाम | छंदोर्णव पिंगल | पद्य संग्रह |
| शिवार्चन | कृष्णसागर | गणित प्रकाश प्रथम भाग |
| सन्ध्यापद्धति | भजनावली | तथा दूसरा भाग |
| भगवद्गीता विष्णुसहस्रनामसहित | शिवसिंह सरोज | तथा तीसरा भाग |
| सन्ध्योपासनादि पञ्चमहायज्ञ | दानलीला गोचारलीला | तथा चौथा भाग |
| भगवद्गीता भाषा टीका हरिवंस | कृष्ण बाल लीला | क्षेत्रचन्द्रिका १ भाग |
| सत | **सरिश्तह तालीम की पुस्तकें** | तथा २ भाग |
| भगवद्गीता भाषाटीका इस में | भाषा लघुव्याकरण | रेखागणित १ भाग |
| आनंदगिरि संन्यासी की बनाई | धात्वर्णव | तथा २ भाग |
| हुई टीका है | अक्षरारम्भ | क्षेत्रप्रकाश |
| हनुमान बाहुक | अक्षर दीपिका | सूर्यपुर की कहानी |
| भगवद्गीता टेप की मूल | विद्यांकुर | विद्या चक्र |
| शनिश्चर की कथा | बालभूषण | पदार्थ विद्यासार |
| **भाषाकाव्य की पुस्तकें** | बालबोध | वर्णप्रकाशिका १ भाग |
| शृंगार बत्तीसी | भाषाचंद्रोदय | तथा २ भाग |
| जगद्विनोद | इतिहास इंगलिस्तान | मंगलकोष |
| गंगालहरी | गणित लता १ भाग | यन्त्रदीपिका |
| कविकुल कल्पतरु | तथा २ भाग | भारत खण्डिका |

| नाम किताब | नाम किताब | नाम किताब |
|---|---|---|
| यत्रहितैषिणी | व्रत्तार्क भाषाटीका सहित | गुलबकावली |
| स्त्रीदर्पण | निर्णय सिंधु संस्कृत | इन्द्रसभा नागरी |
| गुटका राजा शिवप्रसाद कृत | कायस्थ धर्म निरूपण | विश्व विनय |
| हिन्दी किताब रीडर नम्बर २ | **क़ानून की एक्टें** | बहार दवैश |
| क्षेत्र व्यवहारिक तत्त्व | ऐक नंबर १९ सन् १८५८ ईसवी | क़िस्सा गोपीचंद भरतरी |
| रामायण सातों काण्ड | ऐक नं० २० स० १८६८ ई० | पद्मावती खण्ड व आल्ह खण्ड |
| बालकाण्ड | ताज़ीरातहिंद - अर्थात् | गुलसनोबर नागरी |
| अयोध्याकाण्ड | ऐक ४५ सन् १८६० ई० | रामाभिषेक नाटक |
| आरण्यकाण्ड | ऐक नं० ५ स० १८६१ ई० | सहस्त्र रजनी चरित्र |
| किष्किंधाकाण्ड | ऐक नं० २० स० १८६६ ई० | बारहमासा फ़क़ीर अल्लाबख़्श |
| सुंदरकाण्ड | ऐक नं० २६ स० १८६७ ई० | बारहमासा बलदेव प्रसाद कृत |
| लंकाकाण्ड | ऐक नं० १८ स० १८६८ ई० | बाग़ोबहार नागरी |
| उत्तरकाण्ड | ऐक नं० २६ स० १८६६ ई० | क़िस्सह हातिमताई |
| रामायण मानस दीपिका | ऐक नं० २४ स० १८७० ई० | कायस्थ वर्ण निरूपण |
| रामायण कोष<br>रामायण इतिहास | ऐक नं० १ स० १८७१ ई० | कायस्थ दर्पण |
| भाषा तत्त्व दीपिका | ऐक नं० ५० स० १८७२ ई० | कथा चित्रगुप्त |
| हिदायतनामा मुहर्रिसान हलक़बंदी | ऐक नं० १८ स० १८७३ ई० | समर बहार वृन्दाबन |
| विद्या की नेव कैथी अक्षरों में | ऐक नं० १९ स० १८७३ ई० | जनक पच्चीसी |
| विद्यार्थी की प्रथम पुस्तक | तर्जुमा ऐक नं० ११ स० १८७४ ई० | दोहावली - रत्नावली |
| किताब पटवारी ४ भाग | हिदायत नामा मालगुज़ारी | मनोज लतिका |
| ज्ञान चालीसी | सर्क्युलर नम्बर ८० (अ) | कमीशन बड़ोदा |
| शिशुबोध | ऐक नं० १९ स० १८६३ ई० | कायस्थ कुल भास्कर |
| कैथी वर्णमाला २ भाग | ऐक नं० २४ स० १८६५ ई० | इन्द्रजाल नागरी |
| लीलावती नागरी | ऐक नं० १६ स० १८६५ ई० | कल्पसूत्र |
| वृत्तान्त धर्मसिंह | ऐक नं० १८ स० १८५४ ई० | बिहार वृन्दावन |
| लिपि पुस्तक चारों भाग | रेलवे का क़ानून | |
| नारीबोध | | **जो पुस्तकें हाल में छप रही हैं** |
| | **क़िस्से की पुस्तकें॥** | सुखसागर पत्थर के छापे की |
| **धर्मशास्त्र** | बैताल पच्चीसी | विनयपत्रिका तथा |
| मनुस्मृति उर्दू टीका सहित | सिंहासन बत्तीसी | जातका भरण |
| हारीत स्मृति संस्कृत | शुकबहत्तरी | शहज्जातक सटीक |
| याज्ञवल्क्य भाषाटीका सहित | अपूर्व कथा | अमीर हमज़ा नागरी |